बेस्ट ऑफ

काका हाथरसी

बेस्ट ऑफ

काका हाथरसी

लक्ष्मीनारायण गर्ग

प्रभात प्रकाशन, दिल्ली
ISO 9001:2008 प्रकाशक

काका के कहकहे

इन सभी विसंगतियों को देखकर काका ने अपने देश के छात्रों पर सीधे-सीधे व्यंग्य न करके वक्रोक्ति को साधन के रूप में स्वीकार किया। प्रतीत ऐसा होता है कि काका छात्रों को प्रेरित कर रहे हैं, परंतु जब वक्र कथन से निकलनेवाली ध्वनि छात्रों की स्वभावगत असंगतियों पर प्रहार करती है तो देखनेवाला किंकर्तव्यविमूढ़ सा दिखाई देता है-
अधिकारी मानें नहीं, अगर तुम्हारी माँग,

हॉकी लेकर तोड़ दो, अनुशासन की टाँग।

अनुशासन की टाँग, वही बन सकता नेता,

जो सभ्यता, शिष्टता का चूरन कर देता।

फिल्म दिखाए मुफ्त, उसी को मित्र बनाओ,

कॉपी पर माला सिन्हा का चित्र बनाओ।।

छात्र-समुदाय विद्यालयों में शिक्षा प्राप्त करने के उद्देश्य से नहीं जाता। ऐसे युवकों की संख्या अधिक है, जो मात्र अपने को 'हीरो' प्रदर्शित करने के उद्देश्य से कॉलेजें में प्रवेश लेते हैं। कई-कई वर्ष तक एक ही कक्षा में रहकर मानो अपनी 'ज्ञान-नींव' को 'सुदृढ़' करते हैं। ऐसे युवकों को हीरो बनने के लिए यह नुसखा भी खूब है-
पूज्य पिता की नाक में डाले रहो नकेल,

'रेगूलर' होते रहो, तीन साल तक फेल।

तीन साल तक फेल, भाग्य चमकता 'जीरो',

बहुत शीघ बन जाओगे कॉलिज के हीरो।।

काका-कृत विद्यार्थी की परिभाषा में निहित व्यंग्य कितना सार्थकहै-
कहँ काका कविराय, वही सच्चा विद्यार्थी,

जो निकालकर दिखला दे, विद्या की अर्थी।

आधुनिक 'कॉलेज स्टूडेंट' 'श्वान निद्रा वको ध्यानम्' में विश्वास नहीं करता। आदर्श विद्यार्थी की प्राचीन रूपरेखा नितांत धूमिल हो गई है। अब वह नवीन परंपरा का निर्माण कर रहा है। बात भी विचारणीय है कि जब परंपरा-निर्माता बन सकता है तो अनुसरणकर्ता क्यों बने? बड़े-बूढ़े व्यर्थ ही उसके कार्य को अनुचित कहते हैं, उसके मार्ग में बाधा उपस्थित करते हैं। कौन कहता है कि वह अपने जीवन को नष्ट कर रहा है? कौन

कहता है कि वह बिना सींग का पशु हो गया है? किसमें हिम्मत है यह कहने की कि आदर, मान, सम्मान की भावना उससे कोसों दूर हो गई है? ऐसे युवकों को अपने वर्ग की प्रगति के लिए किया गया काका का उद्बोधन विरेध-कथन के माध्यम से कितना बड़ा व्यंग्य है-
आग-से धधक उठो, नग-से फफक उठो,

भाड़-से भभक उठो, हिंद के युवक उठो!

होंठ काटते चलो, जीभर चाटते चलो,

नैन मारते चलो, सैन मारते चलो।

आपकी न मानना, बाप की न मानना,

ताल ठोंकते चलो, मार्ग रोकते चलो।

धर्म-दया छोड़ दो, शर्म-हया छोड़ दो,

सभ्य या असभ्य का, भेद-भाव तोड़ दो।

तर्क को कुतर्क से काटते चलो युवक,

छल-प्रंच स्वार्थ-रस चाटते चलो युवक!

विद्यालयों में ऐसा अद्भुत वातावरण है कि प्रत्येक छात्र अपनी मनमानी करने के लिए स्वतंत्र है। कौन है ऐसा माई का लाल, जो उनके किसी कार्य में बाधा पहुँचाए? यदि अध्यापक, प्राचार्य अथवा अन्य अधिकारी कहना न मानें तो उनका रौद्र रूप देखते ही बनता है-
प्रोफेसर या प्रिंसिपल बोलें जब प्रतिकूल,

हॉकी लेकर तोड़ दो, मेज और इस्टूल।

मेज और इस्टूल, चलाओ ऐसी हॉकी,

शीश और किबाड़ बचे नहिं एकहु बाकी।

यहीं पर नेता बनने की भयंकर राय भी देखिए-
कहँ काका कवि राय भयंकर तुमको देता,

बन सकते हो इसी तरह बिगड़े दिल नेता।

ऐसे ही 'बिगड़े दिल छात्र-नेता' कॉलिज यूनियन का चुनाव लड़ते हैं, तो हलचल मच

जाती है। बड़े-बड़े नेता और राजनीतिक दल खुलकर सामने आ जाते हैं। चुनाव-सभाएँ होती हैं, पोस्टर लगते हैं, कारें दौड़ती हैं, वायदे होते हैं। 'छात्राध्यक्ष का लक्ष्य' शीर्षक कविता में काका ने ऐसे छात्र-नेताओं को अपने व्यंग्य का आलंबन बनाया है। एक चुनाव घोषणा-पत्र का कुछ अंश यहाँ उद्धृत किया जा रहा है-

कितने शर्म की बात है दोस्तो!
हमारे ऐसे प्रतिष्ठित छात्र,
प्रिंसिपल के रूम में जाते हैं तो,
पूछना पड़ता है गिड़गिड़ाकर
'मे आई कम इन सर?'
लानत है इस परंपरा पर,
मेरे अध्यक्ष बनने के बाद-
कोई भी छात्र प्रिंसिपल के
ऑफिस में जाएँगे
तो प्रिंसिपल साब खड़े हो जाएँगे।
क्लास टीचर या प्रोफेसर,
कक्षा में प्रवेश करते ही-
प्रत्येक विद्यार्थी के पैर छुएगा,
तब पढ़ाएगा
वरना डिसमिस कर दिया जाएगा।

काका की समस्त रचनाओं में उनकी भाषा के दो रूप प्राप्त होते हैं। एक खड़ीबोली हिंदी का और दूसरा ब्रजभाषा का। परंतु अधिकांश स्थानों पर खड़ीबोली और ब्रजभाषा का मिश्रित रूप दिखाई देता है।

ब्रज-क्षेत्र के निवासी होने के कारण काका पर ब्रजभाषा का सहज प्रभाव है, जो अपने मुखर रूप में प्रकट हुआ है। उनकी भाषा में न तो कहीं संस्कृत के कठिन शब्द हैं, और न अन्य भाषाओं के अप्रचलित शब्द। हास्य-व्यंग्य की दृष्टि से भाषा का जो सहज, सरल और स्वाभाविक रूप होना चाहिए, वैसा ही रूप काका के साहित्य में उपलब्ध होता है। हास्य के लिए भाषा के व्यावहारिक रूप की अपेक्षा होती है। काका के काव्य की भाषा पूर्ण व्यावहारिक है और हास्य की सृष्टि करने में पूर्ण सक्षम है।

शब्दों को तोड़-मरोड़कर प्रयोग करने से हास्य उत्पन्न होता है, क्योंकि असंगत भाषा हास्य-उत्पत्ति का कारण बनती है। इसके अतिरिक्त अंग्रेजी आदि अन्य भाषाओं के प्रयोग से भी हास्य-सृष्टि होती है। काका ने अंग्रेजी भाषा के अनेक शब्दों का प्रयोग अर्थ के स्पष्टीकरण, तुकों के निर्वाह और हास्य को तीव्रता प्रदान करने के लिए किया है। एक विशेष बात इस प्रयोग में यह है कि कहीं भी शब्द अव्यावहारिक प्रतीत नहीं होते।

काका का एक कौशल और भी है। उन्होंने अंग्रेजी शब्दों को पकड़कर तथाकथित सामाजिक शिष्टता के भौंड़ेपन पर भी आघात किया है। उन्होंने इन शब्दों द्वारा समाज में बुरी तरह से छाई हुई झूठी शिष्टता और छिछले मर्यादाबोध को तिरस्कृत किया है और साथ ही अंग्रेजी शब्दों के लय-छंद के अनुसार हिंदी में उन्हें इस प्रकार जड़ दिया है कि

इससे पाठक के मन में उन परिचित शब्दों का एक नया रूप प्रकट हो जाता है। इन प्रयोगों में उनकी विशेषता इन शब्दों के ध्वनि-वैशिष्ट्य को सही रूप में पकड़ने की है। यह वह रूप नहीं है, जो अंग्रेजी भाषा में व्यक्त होता है, वरन् वह रूप है, जो हिंदी-शब्दों तथा हिंदी वाक्य-विन्यास के परिप्रेक्ष्य में ज्ञात अर्थ से अधिक अर्थ ध्वनित करता है। कुछ उदाहरण पर्याप्त हेंगे-

कॉलेज स्टूडेंट के संदर्भ में कही गई काका की इन पंक्तियों पर ध्यान दीजिए-

(क) पूज्य पिता की नाक में डाले रहो नकेल,

'रेगुलर' होते रहो तीन साल तक फेल।

तीन साल तक फेल, भाग्य चमकता जीरो,

बहुत शीघ बन जाओगे, कॉलिज के हीरो।

(ख) फादर ने बनवा दिए, तीन कोट छह पेंट,

लल्लू मेरा बन गया, कॉलिज स्टूडेंट।

कॉलिज स्टूडेंट, हुए हॉस्टल में भरती,

दिनभर बिस्कुट चरें, शाम को खाएँ इमरती।

कहँ काका कविराय, बुद्धि पर डाली चादर,

मौज कर रहे पुत्र, हड्डयाँ घिसते फादर।

उक्त पंक्तियों में रेगुलर के स्थान पर निरंतर, 'फेल' के स्थान पर अनुत्तीर्ण, 'जीरो' के स्थान पर शून्य, 'फादर' के स्थान पर पिता, 'कॉलेज स्टूडेंट' के स्थान पर छात्र का प्रयोग हो सकता था, किंतु उक्त अंग्रेजी के शब्दों से प्राप्त ध्वनि हास्य के लिए अधिक सहायक हुई है।

मुहावरे

भाषा को गति प्रदान करने तथा भाव और अर्थ को अधिक प्रभावशाली बनाने के उद्देश्य से काका ने अनेक मुहावरों का भी यथास्थान प्रयोग किया है। इनमें से बहुत से मुहावरे ब्रजभाषा से संबंधित हैं। छक्के छुड़ाना, सूरत निकालना, हजम कर जाना, निराशा छाना, बुद्धि ठस्स होना, धता बताना, पोल खोलना, तीर मारना, सिट्टी-पिट्टी गायब होना, पेटा भरना, पैंतरा बदलना, सपोआ मारना, कान के परदे फाड़ डालना, जहर खाकर मर जाना, नैया डूबना, बलिहारी होना, जमाखर्च बराबर होना, अड़ जाना, रंग में ढल जाना, शेखी मारना, रेड़ कर देना, अंटी में आग लगाना, माँजना बिगड़ जाना, चित्त हो जाना आदि मुहावरों का प्रयोग काका ने किया है। सबसे बड़ी बात यह है कि काका की कविताओह्यं में

मुहावरे स्वयं चलकर आए हैं और स्वाभाविक रूप से अर्थ-द्योतन में सहायक हुए हैं। कई स्थानों पर तो मुहावरा होने पर पता भी नहीं चलता।

विविध नामावली का प्रयोग करके भी काका ने हास्य की सृष्टि की है। अपनी कविताओं, लेखों और प्रहसनों में काका ने विलक्षण और हास्योत्पादक नामों का प्रयोग किया है, जिनके संबोधन मात्र से पाठक-श्रोता तीव्र अट्टहास कर उठते हैं। उनमें से कुछ नाम हैं- खेंचूमल, बटोरचंद, हड़पमूल, डकारचंद, ठाकुर उर्रासिंह, सेठ सुपाड़ीलाल, वुँक्तवर कुल्हाड़ासिंह, पापड़चंद पराग, त्रिगुणाचार्य त्रिशूल, आचार्य लकड़भग्गाजी, श्रीयुत घोटमघोट, मि. मक्खीचूस, लपकानंद, पियक्कड़चंद, सेठ कंजूसमल, आचार्य शनिश्चरानंद, मि. कद्दूकस, किशमिशलाल आदि।

शाब्दिक हास्य

शाब्दिक हास्य से तात्पर्य है, 'शब्दों की खिलवाड़'। शब्दों के अनोखे प्रयोग और शब्दों की सर्जरी द्वारा हास्य की सृष्टि करना अर्थात् शब्दजन्य हास्य। काका के काव्य में शाब्दिक हास्य के अनेक सुंदर उदाहरण उपलब्ध होते हैं। अनेक स्थलों पर शब्दों का ऐसा प्रयोग किया गया है कि उनका अर्थ समझ में आते ही हँसी का फव्वारा सा छूटने लगता है। वास्तव में काका की विशेषता शब्दों को उनके नए अर्थ में प्रयुक्त करने की है। अपनी 'काकाकोश' नामक कविता में उन्होंने विभिन्न शब्दों के अनेक रोचक अर्थ लगाए हैं। एक उदहारण पर्याप्त होगा-

भूतपूर्व का अर्थ है, बहुत पुराना भूत,

मात-पिता जिससे डरें, उसका नाम सपूत।

उसका नाम सपूत, मूँग छाती पर दलता,

आजादी के माने समझो उच्छृंखलता।

बदल गए शब्दार्थ, क्योंकि बदली मर्यादा,

चेला माने 'गुरु', गुरु के माने 'दादा'।

शब्दों के आधार पर हास्य प्रस्तुत करनेवाले लेखकों में शब्दों के शब्दार्थ, संकेतार्थ तथा लक्ष्यार्थ तीनों को परखने की विशेष शक्ति होनी चाहिए। उन्हें शब्दों के उचित तथा अनुचित प्रयोग की शैलियों से अवगत रहना चाहिए, उनके लिए केवल यही अपेक्षित नहीं कि वे शब्दों के उचित प्रयोगों से परिचित हों, उनके अनुचित प्रयोगों की विलक्षणता से ही उन्हें परिचित होना चाहिए, क्योंकि इसी के द्वारा सफल हास्य की सृष्टि होती है। काका में यह कला पूर्ण रूप से विद्यमान है। उनकी इस कला-कुशलता के दर्शन 'नाम बड़े, दर्शन छोटे', 'नाम बड़े हस्ताक्षर खोटे', लिंग-भेद', विभिन्न नगरावलोकन आदि में भली प्रकार होते हैं।

अलंकार प्रयोग

काका ने हास्य प्रस्तुत करने के लिए उपमा और श्लेष का अपूर्व प्रयोग किया है। उपमा और रूपक हास्य-प्रसार के अक्षयकोश हैं, जिनसे मनोनुकूल हास्य-रत्न निकलकर पाठकों का मनोरंजन कर सकते हैं; क्योंकि उपमा और उपमेय की विलक्षण समानता का बोध होते ही हास्य की धारा फूट पड़ती है और हँसी रोके नहीं रुकती। काका ने ऐसे विलक्षण और तीक्ष्ण उपमान ढूँढ़ निकाले हैं, जो उपमेय के संपर्क में आते ही इतना तीव्र विरोधाभास प्रस्तुत करते हैं कि हास्य की सृष्टि अनिवार्य रूप से होती है। उपमानों की मौलिकता तथा उनके अपूर्व प्रयोग पाठक की आँखों के सामने एक विचित्र तथा आश्चर्यपूर्ण चित्र निर्मित कर देते हैं, और विरोधाभास इतने तीव्र रूप में प्रदर्शित होता है कि हास्य प्रकट होने में तनिक सा भी विलंब नहीं होता। कुछ अलंकारों के उदाहरण प्रस्तुत हैं-

यमक—

(क) कामगार से बड़े हैं कामचोर जी,
कामचोर के पिता हरामखोर जी,
'काम-ना' करो की सदा कामना करो,
कामिनी-कटारियों का सामना करो।

(ख) लव का मतलब समझिए, लव के लाख प्रकार।
बेमतलब मत लव करो, मतलब का संसार।।

रूपक—

(क)प्रजातंत्र के पेड़ पर, कौआ करें किलोल।
टेपरिकार्डर में भरे, चमगादड़ के बोल।।

(ख)ईमानी अफसर को नीचेवाले बेईमान बना दें।
लालच का पेट्रोल छिड़ककर, नैतिकता में आग लगा दें।।

उदाहरण-

यह सब लक्षण सिद्ध कर रहे,
इतना ऊँचा उठ सकता है भाग्य तुम्हारा
जितना ऊँचा मेरे लल्लू का कनकौआ।

उपमा-

मुंशी चंदालाल का तारकोल-सा रूप।
श्यामलाल का रंग है, जैसे खिलती धूप।।

श्लेष-

जब एवरेस्ट पर जापानी महिला चढ़ी तो काका ने उसकी प्रशंसा के गीत गाए, पर वे काकी को तनिक न भाए और उन्होंने जो कहा, वह श्लेष अलंकार में है—

चोटी पर चढ़कर वह डोले ऐंठी-ऐंठी।

मुझको देखो, दाढ़ी के ऊपर चढ़ बैठी।।

विरोधाभास की दृष्टि से तो काका की 'नाम बड़े दर्शन छोटे' कविता ही इस अलंकार का

पूरा पेटा भर देती है।

—डॉ. द्वारिकाप्रसाद सक्सेना

गणपति बप्पा मोरिया

प्रजातंत्र-प्रंगण में भगवन अजब तमाशा होरिया।

गणपति बप्पा...।।

: 1 :

जोड़-तोड़ के खेल हो रहे, मंत्री-मंडल पेक्तल हो रहे,नारी के डंडे के नीचे, मेल आज फीमेल हो रहे। नाच रहे कठपुतली गुड्डे, खींच रहीं वे डोरियाँ,

गणपति बप्पा...।।

: 2 :

गांधीजी का चित्र लगाकर, जन-गण-धन पर डालें डाका,जाने कब कुरसी छिन जाए, फिर कैसे जीएँगे काका। खोलेंगे अगले चुनाव में, भर लें आज तिजोरियाँ,

गणपति बप्पा...।।

: 3 :

गालों पर छाई है लाली, चेहरा दमक रहा ज्यों दर्पण, ये सपेक्तद डाकू हैं, हरगिज नहीं करेंगे आत्मसमर्पण। जितने पहरेदार बढ़ रहे, उतनी होती चोरियाँ,

गणपति बप्पा...।।

: 4 :

सच्चे स्वतंत्रता सेनानी, 'ताम्रपत्र' को चाट रहे हैं, जाली सर्टिफिकेट बनाकर, चमचे चाँदी काट रहे हैं। डनलप के गद्दों पर, कोई फुटपाथों पर सोरिया,

गणपति बप्पा...।।

: 5 :

फर्स्ट क्लास 'एम.ए.' रिजेक्ट कर, ले लें थर्डक्लास बी.ए. को,
साहब नहीं छुएँगे पैसा, चार लाख दे दो पी.ए. को। जनसेवा का लगा मुखौटा, दाग दनादन गोलियाँ,

गणपति बप्पा...।।

: 6 :

मार्वेक्तटिंग को जाएँ 'हजूरिन' सजकर सरकारी कारों में, उनके दर्शन को हो जाती, भीड़ इकट्ठी बाजारों में।फिल्मी हीरोइन सी लगतीं, ये राष्ट्रीय चकोरियाँ,

गणपति बप्पा...।।

: 7 :

लड़के लंबे बाल बढ़ाएँ, केस कटाती हैं कन्याएँ, बेटे ब्लाउज पहिन रहे हैं, बिटिया जी लुंगी लटकाएँ।धोखे में पड़ जाते 'काका', को छोरा को छोरियाँ?

-गणपति बप्पा...।।

: 8 :

ईमानी अफसर को नीचेवाले बेईमान बना दें, लालच का पैट्रोल छिड़ककर, नैतिकता में आग लगा दें। तू भी खा और हमें खिला, या बाँध बिस्तरा-बोरिया,

गणपति बप्पा...।।

मूँछ माहात्म्यफजब ष्मूँछ माहात्म्यष्क्

मूँछ-माहात्म्य सुना रहे, सुनो लगाकर कान,
ऋषि-मुनि करते रहे, मूँछों का सम्मान।
मूँछों का सम्मान कि जिसके मूँछ नहीं थी,
भारत में उस प्राणी की कुछ पूछ नहीं थी।
कहँ 'काका' कविराय, फिरंगी जबसे आया,
भारत की मूँछों का सत्यानाश कराया।

दुनिया में मूँछें बहुत, कैसे करूँ
बखान, अपनी मूँछों का सदा, बुधजन रखते ध्यान।
बुधजन रखते ध्यान कि जिसके मुँह गुलगुच्छा,
डरते उससे सदा नगर के गुंडा-लुच्चा।
कहँ 'काका' कविराय, देखकर मूँछ नुकीली,
हो जाती है लालाजी की धोती ढीली।

ठाकुर साहब की लगें ऐसी सुंदर मूँछ,
चिपका दी है काटकर ज्यों कुत्ते की पूँछ।
ज्यों कुत्ते की पूँछ, कठिनता से बनती हैं,
यह मत समझो मोम लगाकर ये तनती हैं।
कहँ 'काका' कविराय, भेद तुमको समझाऊँ,
मूँछों में छल्ला पड़ने की युक्ति बताऊँ।

जोर-जोर से ऐंठिए दिन-भर में दस बार,
कुछ दिन में हो जाएँगी मूँछें छल्लेदार।
मूँछें छल्लेदार, अकड़कर रोब जमाओ,
चाहे जिसका माल धौंस देकर ले आओ।
कहँ 'काका' कविराय, रो रहा काछी दुखिया,
मूँछ दिखाकर साग मुफ्त ले जाता मुखिया।

ऊँची-नीची मूँछ हों, नहीं करें जब मैच,
संडे-की-संडे करो, कैंची से परकेंच।
कैंची से परकेंच, भले ही हाफ करा दो,
देवी जी कह दें तो बिलकुल साफ करा दो।
कहँ 'काका', अरजेंट ऑर्डर उनका जानो,
'व्यास' वचन है-'पत्नी को परमेश्वर मानो'।

रेजर टूटा होय अरु ब्लेड न होवे पास,
मुख-मंडल पर आपके उग आई हो घास।
उग आई हो घास, तनिक नहिं देर लगाओ,

बाल-सफा साबुन खरीदकर लेप चढ़ाओ।
कहँ 'काका' कविराय, भाड़ में जाए नाऊ,
एक मिनट में बन जाओ कर्जन के ताऊ।

ज्यादा लंबी मूँछ भी, रहें नहीं अनुकूल,
खतरनाक रहतीं सदा, करो न ऐसी भूल।
करो न ऐसी भूल, किसी से होय लड़ाई,
मूँछ पकड़कर बड़े मजे से होत पिटाई।
कहँ 'काका' कविराय, मचाओगे तब हल्ला,
पकड़-पकड़कर लटकेंगे जब लल्ली-लल्ला।

मूँछों में आ जाए जब कोई भूरा बाल,
खींच लीजिए पकड़कर, चिमटी से तत्काल।
चिमटी से तत्काल, आयु इससे बढ़ जावे,
सदा जवानी रहे, बुढ़ापा पास न आवे।
कहँ 'काका', बढ़ जाए सफेदी का जब हिस्सा,
ले खिजाब अरु बुरुश दनादन मारो घिस्सा।

जिस दफ्तर में जाइए क्लर्कों का सब झुंड,
मैनेजर साहब सहित, मिलें तुम्हें मुँछमुंड।
मिलें तुम्हें मुँछमुंड, किसी ने ऐसी रक्खी,
करती हों मीटिंग नाक के नीचे मक्खी।
कहँ 'काका' कविराय, राज अँगरेज दे गए,
इसके बदले मूँछ हमारी मूड़ ले गए।

कभी तुम्हारी मूँछ के, उखड़ जाएँ कुछ बाल,
शीरा से चिपकाइए, चिपक जाएँ तत्काल।
चिपक जाएँ तत्काल, मूँछ हो जाएँ मीठी,
भाग्यवान हैं आप अगर लग जाएँ चींटी।
कहँ 'काका' कविराय, सुनो भैया हलमस्ता,
खर्च न पाई होए, पुण्य यह सबसे सस्ता।

❑

दहेज की बारात

(ब्रजभाषा में)

जा दिन एक बरात कौ, मिल्यौ निमंत्रण-पत्र,
फूले-फूले हम फिरें, यत्र-तत्र-सर्वत्र।
यत्र-तत्र-सर्वत्र, फरकती बोटी-बोटी,
बा दिन अच्छी नाहिं लगी, अपने घर रोटी।
कहँ 'काका' कविराय, लार म्हौंड़ेसों टपके,
कर लड्डुअन की याद, जीभ स्याँपिन सी लपकै।

मारग में जब है गई अपनी मोटर फेल,
दौरे स्टेशन, लई तीन बजे की रेल।
तीन बजे की रेल, मच रही धक्कमधक्का,
द्वै मोटे गिर परे, पिच गए पतरे कक्का।
कहँ 'काका' कविराय, पटक दूल्हा ने खाई,
पंडितजू रह गए, चढ़ि गयौ ननुआ नाई।

नीचे कों करि थूथरौ, ऊपर कों करि पीठ,
मुरगा बनि बैठे हमहुँ, मिली न कोऊ सीट।
मिली न कोऊ सीट, भीर में बनिगौ भुरता,
फारि लै गयौ कोउ हमारौ आधौ कुरता।
कहँ 'काका' कविराय, परिस्थिति बिकट हमारी,
पंडितजी रहि गए, उन्हीं पै 'टिकस' हमारी।

फक्क-फक्क गाड़ी चलै, धक्क-धक्क जिय होय,
एक पन्हैया रहि गई, एक गई कहुँ खोय।
एक गई कहुँ खोय, तबहिं घुसि आयौ टी-टी,
माँगन लाग्यौ टिकस, रेल ने मारी सीटी।
कहँ 'काका', समझायौ पर नहिं मान्यौ भैया,
छीन लै गयौ, तेरह आना तीन रुपैया।

जनमासे में मचि रह्यो ठंडाई कौ सोर,
मिर्च और सक्कर दइऔ सपरेटा में घोर।
सपरेटा में घोर, बराती करते हुल्लड़,
स्वाद-स्वाद में खेंचि गए हम बारह कुल्हड़।
कहँ 'काका' कविराय, पेट है गयौ नगाड़ौ,

निकरौसी के समय हमें चढ़ि आयौ जाड़ौ।

बेटावारे ने कही, यही हमारी टेक,
दरबज्जे पै लै लऊँ, नगद पाँच सौ एक।
नगद पाँच सौ एक, परेंगी तब ही भाँवर,
दूल्हा करिदौ बंद, दई भीतर सौं साँकर।
कहँ 'काका' कवि, समधी डोलें रूसे-रूसे,
अर्धरात्रि है गई, पेट में कूदें मूसे।

बेटीवारे ने बहुत जोरे उनके हाथ,
पर बेटा के बाप ने सुनी न कोऊ बात।
सुनी न कोऊ बात, बराती डोलें भूखे,
पूरी-लड्डुआ छोड़, चना हू मिले न सूखे।
कहँ 'काका' कविराय, जान आफत में आई,
जम की भैन बरात, कहावत ठीक बनाई।

समधी-समधी लड़ि परे तै न भई कछु बात,
चले घरात-बरात में थप्पड़-घूँसा-लात।
थप्पड़-घूँसा-लात, तमासौ देखें नारी,
देख जंग कौ दृश्य, कँपकँपी बँधी हमारी।
कहँ 'काका' कवि, बाँध बिस्तरा भाजे घर कों,
पीछे सब चल दिए, संग में लैकें वर कों।

मार भातई पै परी, बनिगौ वाको भात,
बिना बहू के गाम कों, आई लौट बरात।
आई लौट बरात, परि गयौ फंदा भारी,
दरबज्जे पै खड़ीं, बरातिन की घरवारी।
कहँ काकी ललकार, लौटकें वापिस जाऔ,
बिना बहू के घर में कोऊ घुसन न पाऔ।

हाथ जोरि माँगी क्षमा, नीची करकें मोंछ,
काकी ने पुचकारिकें, आँसू दीने पोंछ।
आँसू दीने पोंछ, कसम बाबा की खाई,
जब तक जीऊँ, बरात न जाऊँ रामदुहाई।
कहँ 'काका' कविराय, अरे ओ बेटावारे,
अब तौ दै दै, टी-टी वारे दाम हमारे।

❑

चुनाव-चातुर्य

डी-ओ-जी को डॉग कह, सी-ए-टी को कैट,
इतनी इंगलिश बहुत है, रख ले सिर पर हैट।
रख ले सिर पर हैट, पैंट-बुश्शर्ट धारना,
ग्रामसभा में लंबी-चौड़ी डींग मारना।
कहँ 'काका', सिगरेट मुफ्त पड़ जाए पल्ले,
करके मुँह को गोल, धुएँ के छोड़ो छल्ले।

देख तुम्हारा ठाठ यह, रह जाएँ सब दंग,
चेहरा-मुहरा ठीक हो, जम जाएगा रंग।
जम जाएगा रंग, लैक्चर देना सीखो,
उलटे-सीधे बको, मंच पर चढ़कर चीखो।
कहँ 'काका', फिर धीरे-धीरे बदलो चोला,
श्वेत-धवल धोती-कुरता खादी का झोला।

दर्पण रखकर सामने अपना रूप निहार,
होकर खड़े चुनाव में, करो देश-उद्धार।
करो देश-उद्धार, जोड़ गुंडों से नाता,
जिनकी सूरत देख काँप जाए मतदाता।
कहँ 'काका', जो निंदा करते नहीं अघाएँ,
वही विरोधी तुम्हें वोट देने को आएँ।

प्रोपेगेंडा रात-दिन कीजे धुआँधार,
जीत जाए तो पार है, हार जाए तो पार।
हार जाए तो पार, नाम का लाभ उठाओ,
जीत हुई तो वैभव और संपदा पाओ।
कहँ 'काका' कवि, छोड़ मोर्चे को सर करके,
चाहे बरतन-भांडे तक बिक जाएँ घर के।

कर्जा भी लेना पड़े, ले लो आँखें मीच,
जीत जाए तो चौगुना एक वर्ष में खींच।
एक वर्ष में खींच, महाजन सभी डरेंगे,
देख आपका रोब, तकाजा नहीं करेंगे।
कहँ 'काका' कवि, कर्ज छोड़ होंगे आभारी,
दिलवा दो उनको कोई ठेका सरकारी।

कुछ चुनाव के चुटकुले और कीजिए नोट,

मिल सकते हैं आपको सभी जनाने वोट।
सभी जनाने वोट, लिपस्टिक घर-घर बाँटो,
हाथ जोड़कर, दाँत निपोर खीर-सी चाटो।
कहँ 'काका', झंडा लेकर घूमे घरवाली,
भावज, बुआ, जीजी, ताई, सलहज, साली।

एक्सपर्ट इस आर्ट के कर बुर्वेक्त की ओट,
दे सकते हैं आपको, मुर्दों के कुछ वोट।
मुर्दों के कुछ वोट, नोट जब पा जाते हैं,
मियाँ वहीद 'वहीदन' बनकर आ जाते हैं।
कहँ 'काका' कवि, झूठ-फरेब-जाल-मक्कारी,
यह चुनाव का धर्म, जानते सब संसारी।

सीट प्राप्त हो जाए तो मिटे सकल संताप,
अक्कल दिन-दूनी बढ़े, छिपें पुराने पाप।
छिपें पुराने पाप, बनाते रहिए भत्ता,
आज लखनऊ, कल दिल्ली, परसों कलकत्ता।
कहँ 'काका', यह कला सीख बन जाओ नेता,
नेता को भगवान फाड़कर छप्पर देता।

❑

चाय-चक्रम्

एकहि साधे सब सधे, सब साधे सब जाय,
दूध-दही-फल अन्न-जल, छोड़ पीजिए चाय।
छोड़ पीजिए चाय, अमृत बीसवीं सदी का,
जग-प्रसिद्ध जैसे गंगाजल गंग नदी का।
कहँ 'काका', इन उपदेशों का अर्थ जानिए,
बिना चाय के मानव-जीवन व्यर्थ मानिए।

कविता लिखने के लिए 'मूड' नहीं बन पाय,
एक साँस में पीजिए चार-पाँच कप चाय।
चार-पाँच कप चाय, अगर रह जाए अधूरी,
इतने ही लो और, हो गई कविता पूरी।
कहँ 'काका' कवि, खंडकाव्य को पंद्रह प्याला,
पचपन कप में महाकाव्य हमने लिख डाला।

प्लेटफार्म पर यात्री, पानी को चिल्लाय,
पानी वाला है नहीं, चाय पियो जी चाय।
चाय पियो जी चाय, हिलाकर बोला दाढ़ी-
पैसे लेउ निकाल, छूट जाएगी गाड़ी।
'काका' पीकर चाय विरोधी दल का नेता,
धुआँधार व्याख्यान सभा-संसद् में देता।

लक्ष्मण के शक्ति लगी, विकल हुए भगवान,
संजीवनी लेने गए, पवन-पुत्र हनुमान।
पवन-पुत्र हनुमान, आ गए लेकर बूटी,
सेवन करके लखनलाल की निद्रा टूटी।
कहँ 'काका' कवि, जब खोली अक्कल की खत्ती,
समझ गए हम, इसी चाय की थीं कुछ पत्ती।

गायक, वादक, लैक्चरर, नट, नर्तक औ' भाट,
सभी चाय के भक्त हैं, धोबी, तेली, जाट।
धोबी, तेली, जाट, ब्राह्मण, बनियाँ, ताऊ,
माऊ खाँय अफीम, चाय पीते हैं चाऊ।

कहँ ‘काका’, पीछे पीते हैं बाबू-लाला,
पहिले खुद चख लेता चाय बनानेवाला।

❑

श्वान महान

कुत्ता
करें श्वान का मान सब, क्या राजा क्या रंग,
विशेषांक अखबार का निकले कुत्ता अंक।
निकले कुत्ता अंक, बसे हो जन-गण-मन में,
लेखक-आलोचक-संपादक, जड़-चेतन में।
कहँ 'काका' कवि, बड़े-बड़े ऋषि-मुनि ललचाए,
धर्मराज के साथ स्वर्ग को जब तुम धाए।

कुतिया
'काका' कुतिया पालिए, बिना कुतिया घर सून,
जैसे टाई के बिना, व्यर्थ कोट-पतलून।
व्यर्थ कोट-पतलून, जून की गरमी आवें,
घरवाली को छोड़, तुम्हें शिमला ले जावें।
आजादी से बिता रही, सहकारी लाइफ,
नहीं किसी की, और सभी कुत्तों की वाइफ।

पिल्ला
वत्राभूषण से रहित, परमहंस अवधूत,
लल्ला के पिल्ला सुघर, कुतकचंद के पूत।
कुतकचंद के पूत, न बीवी करती गिल्ला,
निर्भय होकर उन्हें चाट सकता है पिल्ला।
कहँ 'काका' कविराय, गोद में लेकर सोती,
देख दृश्य यह इनसानों को ईर्ष्या होती।

❑

न्यायालय में भष्टालय

न्याय प्राप्त करने गए, न्यायालय के द्वार,
इसी जगह सबसे अधिक पाया भष्टाचार।
पाया भष्टाचार, मिसल को मसल रहे हैं,
इऔट-इऔट से रिश्वत के स्वर निकल रहे हैं।
कहँ 'काका', जब पेशकार जी घर को आए,

तनुखा से भी तिगुने नोट दबाकर लाए।
प्लीडर, मुंशी, मुहर्रिर सब निचोड़ लें अर्क,
सायल को घायल करे, फाइल वाला क्लर्क।
फाइल वाला क्लर्क, अगर कुछ बच जाएगा,
वह चपरासी के इनाम में पच जाएगा।
कहँ 'काका', जो जीत गया सो हारा समझो,
हार गया, सो पत्थर से दे मारा समझो।

सिविल कोर्ट के फोर्ट में बाबू करते लूट,
बारह सौ का सूट है, सौ रुपए का बूट।
सौ रुपए का बूट, मलाई मक्खन खाएँ,
मित्रों के सँग पिएँ-पिलाएँ, मौज उड़ाएँ।
इनके घर में दूध-दही की बहती गंगा,
छाछ पी रहा दीन मुवक्किल होकर नंगा।
गए गाँव से कचहरी, करके लंबा टूर,
डेढ़ बज गया, कोर्ट में आए नहीं हुजूर।
आए नहीं हुजूर, किसी का केस न लेंगे,
क्योंकि आज सरकार 'मैटिनी शो' देखेंगे।
कहँ 'काका' कविराय, नोट दस का सरकाएँ,
पेशकारजी तब अगली तारीख लगाएँ।

❑

चुनाव-चक्कर

पिद्दी पांडे ने कहा, हाथ हमारा देख,
'काका' तेरे भाग्य में, मिनिस्टरी की रेख।
मिनिस्टरी की रेख, फुरफुरी मन में आई,
मित्रों से ले कर्ज, जमानत जमा कराई।
जीत गया तो मैं अपनी सरकार बनाऊँ,
हार गया तो सारा कर्ज हजम कर जाऊँ।

मेरे दल के नियम हैं, सभी दलों से भिन्न,
'गधा' हमारी पार्टी के चुनाव का चिह्न।
के चुनाव का चिह्न, व्यर्थ हैं घोड़ा-घोड़ी,
लगे दुलत्ती भाग जाए बैलों की जोड़ी।
बाल हँसिया, गाय भैंसिया हा-हा खाएँ,
हेंचू-हेंचू के भय से दीपक बुझ जाएँ।

अपने दल की विजय का है पूरा विश्वास,
क्योंकि हमारी पार्टी नेता चरते घास।
नेता चरते घास, वोट जब पड़े हमारे,
डूब जाएँगे फिल्म इल्म के सभी सितारे।
कहँ 'काका' कविराय, झोंपड़ी को हम फोड़ें,
साइकिल पंचर करें, टाँग हाथी की तोड़ें।

'काका' का क्या कर सकें, नियम और कानून,
जो विरोध मेरा करे, दूँ गोली से भून।
दूँ गोली से भून, आंदोलन क्या कर लेगा,
जितने अनशन होंगे, उतना अन्न बचेगा।
मर जाने दो, मरें साधु-संन्यासी-योगी,
जनसंख्या बढ़ गई, ठीक ऐसे ही होगी।

❑

पिल्ला

पिल्ला बैठा कार में, मानुष ढोवें बोझ,
भेद न इसका मिल सका, बहुत लगाई खोज।
बहुत लगाई खोज, रोज साबुन से नहाता,
देवीजी के हाथ दूध से रोटी खाता।
कहँ 'काका' कवि, माँगत हूँ वर चिल्ला-चिल्ला,
पुनर्जन्म में प्रभो! बनाना हमको पिल्ला।

मृगनैनी छैनी बनी, पहुँची नैनीताल,
होंठों पर सुर्खी दई, रँग लीने दोउ गाल।
रँग लीने दोउ गाल, धाय को दीना लल्ला,
सिर से साड़ी हटा, बगल में लीना पिल्ला।
कहँ 'काका' कविराय, चाल में आई तेजी,
मेम बन गइऔ देवी जी, पढ़के अँगरेजी।

जग रूठे रूठा करे, मत छोड़ो निज टेक,
पिल्ला पालो प्रेम से, खाओ बिस्कुट-केक।
खाओ बिस्कुट-केक, मूँछ की करो सफाई,
कोट-पैंट लो डाट, गले लटकाओ टाई।
कहँ 'काका' कविराय, काम यह सबसे सच्चा,
बिना पढ़े ही बन जाओ साहब के बच्चा।

❑

दाढ़ी-महिमा

‘काका’ दाढ़ी राखिए, बिन दाढ़ी मुख सून,
ज्यों मसूरी के बिना, व्यर्थ देहरादून।
व्यर्थ देहरादून, इसी से नर की शोभा,
दाढ़ी से ही प्रगति कर गए संत बिनोवा।
मुनि वसिष्ठ यदि दाढ़ी मुँह पर नहीं रखाते,
तो भगवान राम के क्या वे गुरु बन जाते।

शेक्सपियर, बर्नार्ड शॉ, टाल्सटॉय, टैगोर,
लेनिन, लिंकन बन गए जनता के सिरमौर।
जनता के सिरमौर, यही निष्कर्ष निकाला,
दाढ़ी थी, इसलिए महाकवि हुए ‘निराला’।
कहँ ‘काका’, नारी सुंदर लगती साड़ी से,
उसी भाँति नर की शोभा होती दाढ़ी से।

कोई दाढ़ी छीलते, शुक्र-बुद्ध-इतवार,
कोई नित-प्रति खुरचते दिन में दो-दो बार।
दिन में दो-दो बार, ब्लेड की शामत आती,
नष्ट होय इस्पात, विदेशी मुद्रा जाती।
कहँ ‘काका’ कवि और नहीं कम-से-कम तब तक,
दाढ़ी रख लो, राष्ट्रीय संकट है जब तक।

❑

मसूरी-यात्रा

देवी जी कहने लगीं, कर घूँघट की आड़,
हमको दिखलाए नहीं, तुमने कभी पहाड़।
तुमने कभी पहाड़, हाय तकदीर हमारी,
इससे तो अच्छा, मैं नर होती, तुम नारी।
कहँ 'काका' कविराय, जोश तब हमको आया,
मानचित्र भारत का लाकर उन्हें दिखाया।

देखो इसमें ध्यान से, हल हो गया सवाल,
यह शिमला, यह मसूरी, यह है नैनीताल।
यह है नैनीताल, कहो घर बैठे-बैठे-
दिखला दिए पहाड़, बहादुर हैं हम कैसे?
कहँ 'काका' कवि, चाय पिओ औ' बिस्कुट कुतरो,
पहाड़ क्या हैं, उतरो, चढ़ो, चढ़ो, फिर उतरो।

यह सुनकर वे हो गइऔ लड़ने को तैयार,
मेरे बटुए में पड़े, तुमसे मर्द हजार।
तुमसे मर्द हजार, मुझे समझा है बच्ची?
बहका लोगे कविता गढ़कर झूठी-सच्ची?
कहँ 'काका' भयभीत हुए हम उनसे ऐसे,
अपराधी हो कोतवाल के सम्मुख जैसे।

आगा-पीछा देखकर करके सोच-विचार,
हमने उनके सामने डाल दिए हथियार।
डाल दिए हथियार, आज्ञा सिर पर धारी,
चले मसूरी, रात्रि देहरादून गुजारी।
कहँ 'काका', कविराय, रात-भर पड़ी नहीं कल,
चूस गए सब खून देहरादूनी खटमल।

सुबह मसूरी के लिए बस में हुए सवार,
खाई-खंदक देखकर, चढ़ने लगा बुखार।
चढ़ने लगा बुखार, ले रहीं वे उबकाई,
नींबू-चूरन-चटनी कुछ भी काम न आई।
कहँ 'काका', वे बोलीं, दिल मेरा बेकल है,
हमने कहा कि पति से लड़ने का यह फल है।

उनका 'मूड' खराब था, चित्त हमारा खिन्न,
नगरपालिका का तभी आया सीमा-चिह्न।
आया सीमा-चिह्न, रुका मोटर का पहिया,

लाओ टैक्स, प्रत्येक सवारी डेढ़ रुपैया।
कहँ 'काका' कवि, हम दोनों हैं एक सवारी,
आधे हम हैं, आधी अर्धांगिनी हमारी।

बस के अड्डे पर खड़े कुली पहनकर पैंट,
हमें खींचकर ले गए, होटल के एजेंट।
होटल के एजेंट, पड़े जीवन के लाले,
दोनों बाँहें खींच रहे, दो होटल वाले।
एक कहे मेरे होटल का भाड़ा कम है,
दूजा बोला, मेरे यहाँ 'फ्लैश-सिस्टम' है।

हे भगवान! बचाइए, करो कृपा की छाँह,
ये उखाड़ ले जाएँगे, आज हमारी बाँह।
आज हमारी बाँह, दौड़कर आओ ऐसे,
तुमने रक्षा करी ग्राह से गज की जैसे।
कहँ 'काका' कवि, पुलिस-रूप धरके प्रभु आए,
चक्र-सुदर्शन छोड़, हाथ में हंटर लाए।

रख दाढ़ी पर हाथ हम, देख रहे मजदूर,
रिक्शेवाले ने कहा, आदावर्ज हुजूर!
आदावर्ज हुजूर, रखूँ बिस्तरा-टोकरी?
मसजिद में दिलवा दूँ तुमको मुफ्त कोठरी?
कहँ 'काका' कवि, क्या बकता है गाड़ीवाले,

सभी मियाँ समझे हैं तुमने दाढ़ी वाले?
चले गए अँगरेज पर, छोड़ गए निज छाप,
भारतीय संस्कृति यहाँ सिसक रही चुपचाप।
सिसक रही चुपचाप, बीवियाँ घूम रही हैं,
पैंट पहनकर 'मालरोड' पर झूम रही हैं।
कहँ 'काका', जब देखोगे लल्लू के दादा,
धोखे में पड़ जाओगे, नर है या मादा?

बीवी जी पर हो गया फैशन भूत सवार,
संडे को साड़ी बँधी, मंडे को सलवार।
मंडे को सलवार, बॉबकट बाल देखिए,
देशी घोड़ी, चलती इंगलिश चाल देखिए।
कहँ 'काका', फिर साहब ही क्यों रहें अछूते,
आठ कोट, दस पैंट, अठारह जोड़ी जूते।

भूल गए निज सभ्यता, बदल गया परिधान,
पाश्चात्य रंग में रँगी, भारतीय संतान।
भारतीय संतान रो रही माता हिंदी,
आज सुहागिन नारी लगाना भूली बिंदी।
कहँ 'काका' कवि, बोलो बच्चो डैडी-मम्मी,
माता और पिता कहने की प्रथा निकम्मी।

मित्र हमारे मिल गए कैप्टिन घोड़ासिंग,
खींच ले गए 'रिंक' में देखी स्केटिंग।
देखी स्केटिंग, हृदय हम मसल रहे थे,
चंपो के संग मिस्टर चंपू फिसल रहे थे।
काकी बोली-क्यों जी, ये किस तरह लुढ़कते,
चाभी भरी हुई है या बिजली से चलते?

हाथ जोड़ हमने कहा, लालाजी तुम धन्य,
जीवन-भर करते रहो, इसी कोटि के पुन्य।
इसी कोटि के पुन्य, नाम भारत में पाओ,
बिना टिकट, बैकुंक्ठ-धाम को सीधे जाओ।
कहँ काकी ललकार-अरे यह क्या ले आए,
बुद्धू हो तुम, पानी के पैसे दे आए?

हलवाई कहने लगा, फेर मूँछ पर हाथ,
दूध और जल का रहा आदिकाल से साथ।
आदिकाल से साथ, कौन इससे बच सकता?
मसूरी में खालिस दूध नहीं पच सकता।
सुन 'काका', हम आधा पानी नहीं मिलाएँ,
पेट फूल दस-बीस यात्री नित मर जाएँ।

पानी कहती हो इसे, तुम कैसी नादान?
यह मसूरी 'मिल्क' है, जानो अमृत समान।
जानो अमृत समान, अगर खालिस ले आते,
आज शाम तक हम दोनों निश्चित मर जाते।
कहँ 'काका', यह सुनकर और चढ़ गया पारा,
गरम हुइऔ वे, हृदय खौलने लगा हमारा।

उनका मुखड़ा क्रोध से हुआ लाल तरबूज,
और हमारी बुद्धि का बल्ब हो गया फ्यूज।
बल्ब हो गया फ्यूज, दूध है अथवा पानी,
यह मसला गंभीर बहुत है, मेरी रानी।

कहँ 'काका' कवि, राष्ट्रंघ में ले जाएँगे,
अथवा इस पर 'जनमत-संग्रह' करवाएँगे।

शीतयुद्ध सा छिड़ गया, बढ़ने लगा तनाव,
लालबुझक्कड़ आ गए, करने बीच-बचाव।
करने बीच-बचाव, खोल निज मुँह का फाटक,
एक साँस में सभी दूध पी गए गटागट।
कहँ 'काका', यह न्याय देखकर काकी बोली-
चलो हाथरस, मसूरी को मारो गोली।

❑

‘सु’ की सुराही

स्वामी सुतलीदास से बोले सुकवि सुजान,
सु से सुशोभित शब्द को सदा मिला सम्मान।
सदा मिला सम्मान, सु की महिमा है भारी,
किसी कुमारी से सुंदर लगती सुकुमारी।
मित्रानंदन का न हुआ, अब तक अभिनंदन,
‘सु’ की कृपा से वंदित हुए सुमित्रानंदन।

बेढंगे-बेडौल का उड़ता रहा मखौल,
लगे सुहाना सभी को, सुघड़ शरीर सुडौल।
सुघड़ शरीर सुडौल, रहे यूँ ही श्रीदामा,
कृष्णचंद्र से चरण धुलाए भक्त सुदामा।
बिगड़ जाएँ शुभ कार्य, अगर लग जाएँ भद्रा,
सु से प्रतिष्ठित हुई, कृष्ण की बहिन सुभद्रा।

सुबह सु की माला जपो, हाथ सुमरनी धारि,
मिले सुसुर की कृपा से, सुखद सुलोचनि नारि।
सुखद सुलोचनि नारि, रंग महफिल में छाए,
सुरा-सुराही संग सुभाषी साकी आए।
सुरपुर मध्य सुरेंद्र सु की सुषमा से चमके,
सुरमा से बूढ़ी आँखों में यौवन छलके।

सुखदायी हों सभी को, सुरभित सुमन-सुंध,
अतिथि सुखी हो देखकर सुख-सुविधा-सुप्रंध।
सुख-सुविधा-सुप्रंध, सुहावत सुमुखि, सुकेशी,हैं
सुदेश को हितकारी, सब वस्तु सुदेशी।
यद्यपि सिंधु विशाल, हुई सुप्रसिद्ध सरसरी,
दरी पद-दलित हुई, सु से बन गई सुंदरी।

सारंगी से अधिक है, सुरमंडल का मान,
वही सुगायक जानिए, शुद्ध लेय सुर-तान।
शुद्ध लेय सुर-तान, व्यर्थ है छैल-छबीला,
महफिल में वह जमे कि जिसका कंठ सुरीला।
सु से बनी सुसराल, सु को पहिचान अभागे,
फाइन डाउन हुआ सुपरफाइन के आगे।

कड़की होय कुनैन पर मीठे लगें सुनैन,
सु के सबब सुग्रीव को भाए वैद्य सुषेण।
भाए वैद्य सुषेण, ख्याति पाई जन-जन में,

छोड़ कुकर्म, सुकर्म किए जिसने जीवन में।
सुफल उन्हें ही मिला, चले जो सुजन सुपथ पर,
'सुब्रह्मण्यम' हुए प्रतिष्ठित मंत्री पद पर।

शहंशाह नामी हुए, सुलेमान-सुलतान,
पाया सुर्ख गुलाब ने नेहरू से सम्मान।
नेहरू से सम्मान, सु की है अद्भुत माया,
देख सुहासिन नर्स, सुन्न हो जाती काया।
सु से सुलह कर बने, सुखी-सुखिया-सुखकारी,
फीका है वह पान कि जिसमें नहीं सुपारी।

सुज्ञ-सुधीजन से सुने, हमने यह सुविचार,
जहाँ काम आवे सुई, कहा करे तलवार।
कहा करे तलवार, जग रहे या कि सो रहे,
सुखानंद जी सुरानंद में मगन हो रहे।
यह सिद्धांत फैमिली प्लानिंग का है सच्चा,
एक सुपुत्र, पाँच पुत्रों से होता अच्छा।

फेल नई कविता हुई, सफल सुगम्य-सुंद,
नाक सड़े दुर्गंध से, सुखकर लगे सुंध।
सुखकर लगे सुंध, सुशिक्षित सुता सुहानी,
कागा से मीठी होती, सुग्गा की बानी।
धन्य सुरासुर विष्णु शिखर पर 'सु' को चढ़ाया,
ले 'वराह अवतार' सुअर का मान बढ़ाया।

कर्ण छिपे इतिहास में, नामी हुए सुकर्ण,
वर्ण उपेक्षित ही रहा, आगे बढ़ा सुवर्ण।
आगे बढ़ा सुवर्ण, सु से चमकाई माला,
जब सुनार ने इस पर तनिक सुहागा डाला।
सुन सुकाव्य यह बोले एक सुधारक चच्चा,
सौ दुष्टों से एक सुष्ट होता है अच्छा।

कंपोजीटर कह रहे, कहाँ करें अब खोज,
सु समाप्त सब हो गए, कैसे हो कंपोज?
कैसे हो कंपोज, हमारा सर चकराया,
हैं विचित्र काका कवि, सु का सुमेरु बनाया।
लंबी कविता पढ़कर, बोर हुए कवि 'राही',
बहुत हो गया, बंद कीजिए सु की सुराही।

❑

हिंदी बनाम अँगरेजी

हिंदी माता को करें, काका कवि डंडौत,
बूढ़ी दासी संस्कृत, भाषाओं का स्रोत।
भाषाओं का स्रोत कि 'बारह बहुएँ' जिसकी,
आँख मिला पाए उससे, हिम्मत है किसकी?
ईर्ष्या करके ब्रिटेन ने इक दासी भेजी,
सब बहुओं के सिर पर चढ़ बैठी अँगरेजी।

गोरे-चिट्टे-चुलबुले, अंग-प्रत्यंग प्रत्येक,
मालिक लट्टू हो गया, नाक-नक्श को देख।
नाक-नक्श को देख, डिग गई नीयत उसकी,
स्वामी को समझाय, भला हिम्मत है किसकी?
अँगरेजी पटरानी बनकर थिरक रही है,
संस्कृत-हिंदी दासी बनकर सिसक रही हैं।

परिचित हैं इस तथ्य से, सभी वर्ग-अपवर्ग,
सास-बहू में मेल हो, घर बन जाए स्वर्ग।
घर बन जाए स्वर्ग, सास की करें हिमायत,
प्रगति करे अवरुद्ध, भला किसकी है ताकत?
किंतु फिदा दासी पर है 'गृहस्वामी' जब तक,
इस घर से वह नहीं निकल सकती है तब तक।

❑

काका की ऊँटगाड़ी

*(*स्वतंत्रता-प्राप्ति के दिन ***15*** अगस्त***, 1947*** को तिरंगे झंडों से सुसज्जित 'काका की ऊँटगाड़ी' कांग्रेस के विशाल जुलूस के साथ निकली थी*;* उस पर राष्ट्रीय रिकॉर्ड बज रहे थे और निम्नलिखित फुलझड़ियों की पर्चियाँ बाँटी जा रही थीं।*)*

: 1 :

मारग में से हट गया, जब अंग्रेजी ठूँठ,
आजादी को लादकर लाया मेरा ऊँट।
लाया मेरा ऊँट, बैठ गाड़ी में जाओ,
अमरीकन अँगरेज, सामने से हट जाओ!
कहँ 'काका' कविराय, ध्यान से देखो भइया,
झंडेवाला चक्र, ऊँटगाड़ी का पहिया।

: 2 :

पंद्रहवीं तारीख से हुआ ऊँट आजाद,
अंग्रेजों की साहबी कर डाली बरबाद।
कर डाली बरबाद, घुमाते थे जो डंडा,
अपने हाथों लगा रहे थाने पर झंडा।
कहँ 'काका' कवि, कोतवाल के साथ सिपंगा,
घूम रहे हैं लगा-लगाकर बैज तिरंगा।

: 3 :

कहा कहूँ छवि आपकी, मेरे ऊँट हुजूर,
लंबी-लंबी टाँग हैं, जैसे पेड़ खजूर।
जैसे पेड़ खजूर, सुहावत रूप अनूपा,
ऊँटनी के पतिदेव, गधा के लगते फूफा।
कहँ 'काका' कविराय, सुघर गरदन का ढाँचा,
बारंबार प्रणाम लेउ, हाथी के चाचा।

: 4 :

गवरमेंट को चाहिए, उन्हें भेज दे जेल,
जिन लोगों ने आपके, डाली नाक नकेल।
डाली नाक नकेल, एक प्रस्ताव बनाऊँ,
रख संसद् में फौरन उसे पास करवाऊँ।
कहँ 'काका', जो व्यक्ति रहट में ऊँट चलाए,
तीन साल की सख्त सजा उसको दी जाए।

: 5 :

धन्य-धन्य श्री ऊँटजी! मारवाड़ के हंस,
लंबाई का मिल गया, ईश्वर से लैसंस।
ईश्वर से लैसंस, त्याग का पाठ पढ़ाते,
मीठा हमको छोड़, नीम कड़वा तुम खाते।
कहँ 'काका' कवि, आज तुम्हें मिष्टान्न खिलाऊँ,

पेड़ा-खुरचन बालूशाई लेकर आऊँ।

: 6 :

स्वतंत्रता की खुशी में, झंडा दिया लगाय,
मीठी प्याऊ के लिए परमिट लिया मँगाय।
परमिट लिया मँगाय, सुगर की चारों बोरी,
दई ब्लैक में बेच, नहीं इसमें कुछ चोरी।
कहँ 'काका' कविराय, मौज कर रहा हिलंदा,
'आजादी' में पनप रहा है काला धंधा।

❑

शिव का धनुष

विद्यालय में आ गए इंस्पेक्टर-स्कूल,
छठी क्लास में पढ़ रहा विद्यार्थी हरफूल।
विद्याथी हरफूल, प्रश्न उससे कर बैठे,
किसने तोड़ा शिव का धनुष बताओ बेटे?
छात्र सिटपिटा गया बिचारा, धीरज छोड़ा,
हाथ जोड़कर बोला-सर, मैंने ना तोड़ा।

यह उत्तर सुन आ गया सर के सर को ताव,
फौरन बुलवाए गए हैडमास्टर साब।
हैडमास्टर साब, पढ़ाते हो क्या इनको,
किसने तोड़ा धनुष नहीं मालूम है जिनको।
हैडमास्टर भन्नाया-'फिर तोड़ा किसने?
झूठ बोलता है, जरूर तोड़ा है इसने।'

इंस्पेक्टर अब क्या कहे, मन-ही-मन मुसकाए,
ऑफिस में आकर हुई मैनेजर से बात।
मैनेजर से बात, छात्र में जितनी भी है,
उससे दुगुनी बुद्धि हैडमास्टर जी की है।
मैनेजर बोला, जी हम चंदा कर लेंगे,
नया धनुष उससे भी अच्छा बनवा देंगे।

शिक्षा-मंत्री तक गए जब उनके जजबात,
माननीय गद्गद हुए, बहुत खुशी की बात।
बहुत खुशी की बात, धन्य हैं ऐसे बच्चे,
अध्यापक, मैनेजर भी हैं कितने सच्चे!
कह दो उनसे, चंदा कुछ ज्यादा कर लेना,
जो बैलेंस बचे वह हमको भिजवा देना।

❑

सच्चा विद्यार्थी

अधिकारी मानें नहीं, अगर आपकी माँग,
हॉकी लेकर तोड़ दो, अनुशासन की टाँग।
अनुशासन की टाँग, वही बन सकता नेता,
जो सभ्यता, शिष्टता का चूरन कर देता।
फिल्म दिखाए मुफ्त, उसी को मित्र बनाओ,
कॉपी पर माला सिन्हा के चित्र बनाओ।

पूज्य पिता की नाक में, डाले रहो नकेल,
'रेगुलर' होते रहो, तीन साल तक फेल।
तीन साल तक फेल, भाग्य चमकता जीरो,
बहुत शीघ बन जाओगे, कॉलिज के हीरो।
कहँ 'काका' कविराय, वही सच्चा विद्यार्थी,
जो निकालकर दिखला दे, विद्या की अर्थी।

❑

कॉलिज स्टूडेंट

फादर ने बनवा दिए तीन कोट, छै पैंट,
लल्लू मेरा बन गया कॉलिज स्टूडेंट।
कॉलिज स्टूडेंट, हुए हॉस्टल में भरती,
दिनभर बिस्कुट चरें, शाम को खाएँ इमरती।
कहँ 'काका' कविराय, बुद्धि पर डाली चादर,
मौज कर रहे पुत्र, हड्डियाँ घिसते फादर।

पढ़ना-लिखना व्यर्थ है, दिनभर खेलो खेल,
होते रहु दो साल तक फर्स्ट ईयर में फेल।
फर्स्ट ईयर में फेल, जेब में कंघा डाला,
साइकिल ले चल दिए, लगा कमरे का ताला।
कहँ 'काका' कविराय, गेटकीपर से लड़कर,
मुफ्त सिनेमा देख, कोच पर बैठ अकड़कर।

प्रोफेसर या प्रिंसिपल बोलें जब प्रतिकूल,
लाठी लेकर तोड़ दो मेज और स्टूल।
मेज और स्टूल, चलाओ ऐसी हॉकी,
शीशा और किवाड़ बचे नहिं एकउ बाकी।
कहँ 'काका' कवि, राय भयंकर तुमको देता,
बन सकते हो इसी तरह 'बिगड़े दिल नेता।'

❑

जम और जँवाई

बड़ा भयंकर जीव है, इस जग में दामाद,
सास-ससुर को चूसकर, कर देता बरबाद।
कर देता बरबाद, आप कुछ पियो न खाओ,
मेहनत करो, कमाओ, इसको देते जाओ।
कहँ 'काका' कविराय, सासरे पहुँची लाली,
भेजो प्रति त्योहार मिठाई भर-भर थाली।

लल्ला हो इनके यहाँ, देना पड़े दहेज,
लल्ली हो अपने यहाँ, तब भी कुछ तो भेज।
तब भी कुछ तो भेज, हमारे चाचा मरते,
रोने की एक्टिंग दिखा कुछ लेकर टरते।
'काका' स्वर्ग प्रयाण करे बिटिया की सासू,
चलो दक्षिणा देउ और टपकाओ आँसू।

जीवन भर देते रहो, भरे न इनका पेट,
जब मिल जाएँ वुँक्तवरजी, तभी करो कुछ भेंट।
तभी करो कुछ भेंट, जँवाई-घर हो शादी,
भेजो लड्डू, कपड़े, बरतन, सोना-चाँदी।
कहँ काका, हो अपने यहाँ विवाह किसी का,
तब भी इनको देउ, करो मस्तक पर टीका।

कितना भी दे दीजिए, तृप्त न हो यह शख्स,
तो फिर यह दामाद है अथवा लैटरबक्स?
अथवा लैटरबक्स, मुसीबत गले लगा ली,
नित्य डालते रहो, किंतु खाली का खाली।
कहँ काका कवि, ससुर नर्क में सीधा जाता,
मृत्यु समय यदि दर्शन दे जाए जमाता।

और अंत में तथ्य यह कैसे जाएँ भूल,
आया हिंदू कोड बिल इनको ही अनुकूल।
इनको ही अनुकूल, मार कानूनी घिस्सा,
छीन पिता की संपत्ति से पुत्री का हिस्सा।

काका एक समान लगें जम और जँवाई,
फिर भी इनसे बचने की कुछ युक्ति न पाई।

❑

कान महान्

: 1 :
आँख-नाक-पुतली-पलक, हाथ-पाँव-मुख-दंत,
नख-शिख-वर्णन से भरे, रीतिकाव्य के
ग्रंथ।रीतिकाव्य के ग्रंथ, सभी हमने पढ़ डाले,
इतने पलटे पृष्ठ, पड़े अंगुली पर छाले।
बिना खून के नाखूनों की मिली बड़ाई,
किंतु किसी में कान-प्रशंसा कहीं न पाई।

: 2 :
नंददास, कवि जायसी, घनानंद, मतिराम,
देव-बिहारी ने नहीं, लिया कान का नाम।
नहीं कान का नाम, पढ़े रसखान व केशव,
कालिदास-कृत 'शावुंक्तलम्' व 'कुमारसंभव'।
रत्नाकर कवि तुलसी-सूर-चंदबरदाई,विद्यापति,
पद्माकर को भी याद न आई।

: 3 :
काव्य पुरातन छोड़कर, परख आधुनिककाल,
पंत-निराला भी चले, वही पुरानी चाल।
वही पुरानी चाल, कान के कुछ गुण गाती,
धर्मवीर की 'कनुप्रिया' सार्थक हो जाती।
अगर 'उर्वशी' में दिनकर कर्णस्तुति गाते,
एक लाख से दुगुना पुरस्कार पा जाते।

: 4 :
भारतेंदु-हरिऔध ने, दिया न इस पर ध्यान,
कैसी लगती नायिका, अगर न होते कान।
अगर न होते कान, बालियाँ नहीं सुहातीं,
कहो, कहाँ पर कर्णफूल-वुंक्तडल लटकातीं।
कैसे गातीं गीत, मार नूपुर के ठुमका,
गिरता नहीं 'बरेली के बाजार में झुमका'।

: 5 :
ऐंडे-भेंडे-बेतुके, पा जाते सम्मान,
ऐनक द्वारा बढ़ गई, मिस-मिस्टर की शान।
मिस-मिस्टर की शान, कूतिए कर्ण-करिश्मा,
बिना कान आँखों पर कैसे टिकता चश्मा?

मंत्रीजी के कान विधायक कैसे भरते,
चमचा भैया कानाफूसी कैसे करते?

: 6 :
छोटे बच्चों में भरा कान-ज्ञान-विज्ञान,
गंदी बातें मत करो, पक जाएँगे कान।
पक जाएँगे कान, छात्रगण समझ न पाएँ,
गलती करे दिमाग, कान क्यों पकड़े जाएँ?
कानों से जीवों ने जीवन संज्ञा पाई,
हुए अवतरित कानखजूरा-कानसलाई।

: 7 :
मुखमंडल के संतरी, पहरेदार-प्रधान,
आँखों से आँखें लड़ीं, 'खड़े हो गए कान'।
खड़े हो गए कान, बनो कानों के सच्चे,
आदर्शों से लुढ़क जाएँ, कानों के कच्चे।
कान शब्द का दुरुपयोग करते मनमाना,
एक आँख वाले को क्यों कहते हो काना?

: 8 :
कर्णेंद्रिय से चल रहे, तार और बेतार,
बिना कान के फोन या हैडफोन बेकार।
हैडफोन बेकार, ऑपरेटर है लक्की,
कान न हों तो बैठे-बैठे मारें मक्खी।
पायलेट के कान मार्ग को आँक रहे हैं,
सुनकर वायरलेस, प्लेन को हाँक रहे हैं।

: 9 :
शब्द बने हैं कान से ही थकान-ढलकान,
हर मकान-दुकान में, घुसे हुए हैं कान।
घुसे हुए हैं कान, हास्य की विधा बताई,
कानों तक मुँह फैलाया, 'मुसकान' कहाई।
'ए कानन' का गायन सुनकर बोले लाला,
एक जमाने में प्रसिद्ध थी काननबाला।

: 10 :
कान-कीर्ति को ढूँढने, क्यों जाते हो दूर,
कान-कृपा से 'कानपुर' शहर हुआ मशहूर।
शहर हुआ मशहूर, ब्राह्मण हैं कनबजिया,

कान पकड़कर पैसे लेता कानमैलिया।
कामशात्र तज, कानशात्र पर रक्खो निष्ठा,
तानसेन को कानसेन से मिली प्रतिष्ठा।

: 11 :
वुंक्तडल धारे कान में, हुए अवतरित कर्ण,
देते थे जो दान में, नित्य सवा मन स्वर्ण।
नित्य सवा मन स्वर्ण, मानते गायक श्रोता,
बिना श्रोत्र, स्वर-श्रुतियों का अस्तित्व न होता।
सभी इंद्रियों से कर्णेंद्रिय अधिक जरूरी,
श्रवण-कीर्तन बिन है 'नवधा भक्ति' अधूरी।

: 12 :
कान्ह-कृष्ण ने कान को जग में किया प्रसिद्ध,
कनपोटा धारण करें ब्रज के साधक-सिद्ध।
ब्रज के साधक-सिद्ध, मुकरियाँ कहाँ पहनते,
'कानाबाती कुर्र' वुंक्तवर जी कैसे करते?
गीत 'कर्णछेदन' के काकी कैसे गाती,
'काका' कवि की यह कविता कैसे बन जाती?

❑

असली और नकली

घासलेट बतला रहीं, हम लाए घी शुद्ध,
इसी प्रश्न पर हो गया, घरवाली से युद्ध।
घरवाली से युद्ध, सँभाला हमने डंडा,
दो बेलन पड़ गए, हो गया डंडा ठंडा।
कहँ 'काका' कवि, बहा आँसुओं का परनाला,
मर जाने का उसी समय निर्णय कर डाला।

गैरत के कारण हुआ बुरा हमारा हाल,
दो रुपए का संखिया ले आए तत्काल।
ले आए तत्काल, पीसकर फंकी मारी,
मुँह ढककर सो गए, स्वर्ग की कर तैयारी।
कहँ 'काका' कविराय, जान ईश्वर ने रख ली,
नहीं मरे हम, क्योंकि संखिया निकला नकली।

वर-विरोध

सेठ भिखारीदास का बेटा लखमीचंद,
शादी को बेचैन था, एक नेत्र था बंद।
एक नेत्र था बंद, रात-दिन आहें भरता,
शिवशंकर की पूजा नित्य नियम से करता।
भोले हुए प्रसन्न, कहा- 'वर माँगो भइए',
वह बोला- 'वर नहीं मुझे तो कन्या चाहिए।'

❑

तेली कौ ब्याह

भोलू तेली गाँव में करे तेल की सेल,
गली-गली फेरी करे, 'तेल लेउ जी तेल'।
तेल लेउ जी तेल, कड़कड़ी ऐसी बोली,
बिजुरी तड़के अथवा छूट रही हों गोली।
कहँ काका कवि, कछु दिन तक सन्नाटौ छायौ,
एक वर्ष तक तेली नहीं गाँव में आयौ।

मिल्यौ अचानक एक दिन, मरियल बाकी चाल,
काया ढीली-पिलपिली, पिचके दोऊ गाल।
पिचके दोऊ गाल, गैल में धक्का खावै,
'तेल लेउ जी तेल' बकरिया सौं मिमियावै।
हमने पूछी-'यह का हाल है गयौ तेरौ?'
तेली बोल्यौ-'काका' ब्याह है गयौ मेरौ।'

❑

टिट फार टैट

गदहा कहे कुम्हार से, तू क्या पीटे मोय,
गाँव छोड़ चल शहर को, मैं पिटवाऊँ तोय।
मैं पिटवाऊँ तोय, गधे को आई मस्ती,
चौराहे पर पहुँच, झाड़ने लगा दुलत्ती।
कहँ 'काका' कवि, चोट खा गए मोटे लाला,
लाला ने गदहेवाला घायल कर डाला।

❑

नाम बड़े, दर्शन छोटे

नाम-रूप के भेद पर कभी किया है गौर?
नाम मिला कुछ और तो, शक्ल-अक्ल कुछ और,
शक्ल-अक्ल कुछ और, नैनसुख देखे काने,
बाबू सुंदरलाल बनाए ऐंचकताने।
कहँ 'काका' कवि, दयाराम जी मारें मच्छर,
विद्याधर को भैंस बराबर काला अक्षर।

मुंशी चंदालाल का तारकोल-सा रूप,
श्यामलाल का रंग है जैसे खिलती धूप।
जैसे खिलती धूप, सजे बुश्शर्ट पैंट में,
ज्ञानचंद छै बार फेल हो गए टैंथ में।
कहँ 'काका' ज्वालाप्रसाद जी बिलकुल ठंडे,
पंडित शांतिस्वरूप चलाते देखे डंडे।

देख अशर्फीलाल के घर में टूटी खाट,
सेठ भिखारीदास के मील चल रहे आठ।
मील चल रहे आठ, कर्म के मिटें न लेखे,
धनीराम जी हमने प्रायः निर्धन देखे।
कहँ 'काका' कवि, दूल्हेराम मर गए क्वाँरे,
बिना प्रियतमा तड़पें प्रीतमसिंह बिचारे।

दीन श्रमिक भड़का दिए, करवा दी हड़ताल,
मिल-मालिक से खा गए रिश्वत दीनदयाल।
रिश्वत दीनदयाल, करम को ठोंक रहे हैं,
ठाकुर शेरसिंह पर कुत्ते भौंक रहे हैं।
'काका' छै फिट लंबे छोटूराम बनाए,
नाम दिगंबरसिंह वत्र ग्यारह लटकाए।

पेट न अपना भर सके जीवन भर जगपाल,
बिना सूँड़ के सैकड़ों मिलें गणेशीलाल।
मिलें गणेशीलाल, पैंट की क्रीज सम्हारी,
बैग कुली को दिया चले मिस्टर गिरिधारी।
कहँ 'काका' कविराय, करें लाखों का सट्टा,
नाम हवेलीराम किराए का है अट्टा।

दूर युद्ध से भागते, नाम रखा रणधीर,
भागचंद की आज तक सोई है तकदीर।
सोई है तकदीर, बहुत से देखे-भाले,

निकले प्रिय सुखदेव सभी, दुख देने वाले।
कहँ 'काका' कविराय, आँकड़े बिलकुल सच्चे,
बालकराम ब्रह्मचारी के बारह बच्चे।

चतुरसेन बुद्धू मिले, बुद्धसेन निर्बुद्ध,
श्री आनंदीलालजी रहें सर्वदा क्रुद्ध।
रहें सर्वदा क्रुद्ध, मास्टर चक्कर खाते,
इनसानों को मुंशी तोताराम पढ़ाते।
कहँ 'काका', बलवीरसिंह जी लटे हुए हैं,

थानसिंह के सारे कपड़े फटे हुए हैं।
बेच रहे हैं कोयला, लाला हीरालाल,
सूखे गंगाराम जी, रूखे मक्खनलाल।
रूखे मक्खनलाल, झींकते दादा-दादी,
निकले बेटा आशाराम निराशावादी।
कहँ 'काका' कवि, भीमसेन पिद्दी-से दिखते,
कविवर 'दिनकर' छायावादी कविता लिखते।

आकुल-व्याकुल दीखते शर्मा परमानंद,
कार्य अधूरा छोड़कर भागे पूरनचंद।
भागे पूरनचंद अमरजी मरते देखे,
मिश्रीबाबू कड़वी बातें करते देखे।
कहँ 'काका', भंडारसिंह जी रीते-थोते,
बीत गया जीवन विनोद का रोते-धोते।

शीला जीजी लड़ रहीं, सरला करतीं शोर,
कुसुम, कमल, पुष्पा, सुमन निकलीं बड़ी कठोर ।
निकलीं बड़ी कठोर, निर्मला मन की मैली,
सुधा सहेली अमृतबाई सुनीं विषैली।
कहँ 'काका' कवि, बाबूजी क्या देखा तुमने?
बल्ली जैसी मिस लल्ली देखी है हमने।

तेजपाल जी भोथरे मरियल-से मलखान,
लाला दानसहाय ने करी न कौड़ी दान।
करी न कौड़ी दान, बात अचरज की भाई,
वंशीधर ने जीवन भर वंशी न बजाई।
कहँ 'काका' कवि, फूलचंदजी इतने भारी,
दर्शन करके कुरसी टूट जाए बेचारी।

खट्टे-खारी-खुरखुरे मृदुलाजी के बैन,
मृगनैनी के देखिए चिलगोजा से नैन।
चिलगोजा से नैन शांता करती दंगा,
नल पर न्हातीं गोदावरी, गोमती, गंगा।
कहँ 'काका' कवि, लज्जावती दहाड़ रही है,
दर्शनदेवी लंबा घूँघट काढ़ रही है।

कलियुग में कैसे निभे पति-पत्नी का साथ,
चपलादेवी को मिले बाबू भोलानाथ।
बाबू भोलानाथ, कहाँ तक कहें कहानी,
पंडित रामचंद्र की पत्नी राधारानी।
'काका', लक्ष्मीनारायण की गृहिणी रीता,
कृष्णचंद्र की वाइफ बनकर आई सीता।

अज्ञानी निकले निरे पंडित ज्ञानीराम,
कौशल्या के पुत्र का रक्खा दशरथ नाम।
रक्खा दशरथ नाम, मेल क्या खूब मिलाया,
दूल्हा संतराम को आई दुलहिन माया।
'काका' कोई-कोई रिश्ता बड़ा निकम्मा,
पार्वतीदेवी हैं शिवशंकर की अम्मा।

पूँछ न आधी इंच भी, कहलाते हनुमान,
मिले न अर्जुनलाल के घर में तीर-कमान।
घर में तीर-कमान, बदी करता है नेका,
तीर्थराज ने कभी इलाहाबाद न देखा।
सत्यपाल 'काका' की रकम डकार चुके हैं,
विजयसिंह दस बार इलेक्शन हार चुके हैं।

सुखीराम जी अति दुखी, दुखीराम अलमस्त,
हिकमतराय हकीमजी रहें सदा अस्वस्थ।
रहें सदा अस्वस्थ, प्रभु की देखो माया,
प्रेमचंद ने रत्ती भर भी प्रेम न पाया।
कहँ 'काका', जब व्रत-उपवासों के दिन आते,
त्यागी साहब, अन्न त्यागकर रिश्वत खाते।

रामराज के घाट पर आता जब भूचाल,
लुढ़क जाएँ श्री तख्तमल, बैठें घूरेलाल।
बैठें घूरेलाल रंग किस्मत दिखलाती,
इतरसिंह के कपड़ों में भी बदबू आती।

कहँ 'काका', गंभीरसिंह मुँह फाड़ रहे हैं,
महाराज लाला की गद्दी झाड़ रहे हैं।

दूधनाथ जी पी रे सपरेटा की चाय,
गुरु गोपालप्रसाद के घर में मिली न गाय।
घर में मिली न गाय, समझ लो असली कारण,
मक्खन छोड़ डालडा खाते बृजनारायण।
'काका', प्यारेलाल सदा गुर्राते देखे,
हरिश्चंद्रजी झूठे केस लड़ाते देखे।

रूपराम के रूप की निंदा करते मित्र,
चकित रह गए देखकर कामराज का चित्र।
कामराज का चित्र, थक गए करके विनती,
यादराम को याद न होती सौ तक गिनती।
कहँ 'काका' कविराय, बड़े निकले बेदर्दी,
भरतराम ने चरतराम पर नालिश कर दी।

नाम-धाम से काम का, क्या है सामंजस्य?
किसी पार्टी के नहीं झंडाराम सदस्य।
झंडाराम सदस्य, भाग्य की मिटे न रेखा,
स्वर्णसिंह के हाथ कड़ा लोहे का देखा।
कहँ 'काका', कंठस्थ करो, यह बड़े काम की,
माला पूरी हुई एक सौ आठ नाम की।

❑

नाम बड़े हस्ताक्षर खोटे

प्रगति राष्ट्रभाषा करे, यह विचार है नेक,
लेकिन आई सामने, विकट समस्या एक।
विकट समस्या एक, कार्य हिंदी में करते,
किंतु शॉर्ट में हस्ताक्षर करने से डरते।
बोले काशीनाथ जरा हमको बतलाना,
दोनों आँखें होते हुए लिखूँ मैं 'काना'।

इसी तरह से और भी कर सकते हैं तर्क,
प्रोफेसर या प्रिंसिपल, अफसर, बाबू, क्लर्क।
अफसर, बाबू, क्लर्क, होय गड़बड़ घोटाला,
डॉक्टर नाथूलाल करें हस्ताक्षर 'नाला'।
कहँ काका, बतलाओ क्या संभव है ऐसा,
लाला भैंरों साह स्वयं को लिख दे 'भैंसा'?

परिवर्तन घनघोर हों, बदल जाएगी कौम,
डोंगरमल संक्षिप्त में लिखे जाएँगे 'डोम'।
लिखे जाएँगे डोम, नाम असली को खो जाएँ,
गुप्पोमल को शॉर्ट करो तो 'गुम' हो जाएँ।
उजले कांतिलाल, किंतु कहलाएँ 'काला',
भैया, भाईलाल पुकारे जाएँ 'भाला'।

हरीलाल अपनी कलम से हो जाएँ 'हलाल',
श्री दरबारीलाल को बनना पड़े 'दलाल'।
बनना पड़े दलाल, तमाशा होय निराला,
आवें साहूलाल, कहें वह आया 'साला'।
लिखें बुलाकीराम 'बुरा' क्यों बुरा न मानें?
सुखीराम हों 'सुरा', सुरा का स्वाद न जानें।

'सीरा' सीताराम हों, जाहरमल हों 'जाम',
जीते-जी लिक्खें 'मरा', मामा मगनीराम।
मामा मगनीराम, किसी का क्या कर लेंगे?
चिढ़ा-चिढ़ाकर गजधारी को 'गधा' कहेंगे।
कहँ काका कवि, बाबूलाल बनेंगे 'बाला',
पंडित प्यारेलाल लिखे जाएँगे 'प्याला'।

मालिक दानसहाय को लिखना होगा 'दास',
और सारदासदन जी कहलाएँगे 'सास'।
कहलाएँगे सास, हँसें सब चेली-चेला,

गुरुवर केशवलाल करें हस्ताक्षर 'केला'।
कहँ काका कविराय, लोग मारेंगे ताने,
जयनारायण नेबटिया कहलाएँ 'जनाने'।

गूजरमल जी 'गूम' हों, बूचीमल जी 'बूम',
सूरजमल से सब कहें आओ मिस्टर 'सूम'!
आओ मिस्टर सूम, होय आपस में दंगा,
नंदनगायक से जब लोग कहेंगे 'नंगा'।
पुल्लिंग पर त्रीलिंग हो जाएगा हावी,
कैप्टन भारतवीर कहे जाएँगे 'भावी'।

लोग मनोरंजन करें, होनी हो सो होय,
गजानंद धीमान को 'गधी' कहें सब कोय।
गधी कहें सब कोय, हँसे नर-नारी सारे,
श्री सूरजपरसाद 'सूप' बन जाएँ बिचारे।
स्यामनाथजी स्वयं करें हस्ताक्षर 'स्याना',
नागनाथ को देख कहें-आओजी 'नाना'।

हिंदू ईश्वरदत्त का शॉर्ट नाम हो 'ईद',
लाला लीलादत्त जी बन जाएँगे 'लीद'।
बन जाएँगे लीद, मजे तो तब आएँगे,
तेजपाल लीडर जब 'तेली' कहलाएँगे।
कहँ काका कवि, होतीलाल कहाएँ 'होला',
छोटेलाल बिचारे बन जाएँगे 'छोला'।

इस संक्षिप्तीकरण से हों व्यक्तित्व खराब,
शक्तिराम बर्मन स्वयं कैसे लिखे 'शराब',
कैसे लिखें शराब, दया हमको आएगी,
हरीवंश त्यागी की 'हत्या' हो जाएगी।
बदल जाएँ उपनाम, होएँ मानी-बेमानी,
कहलाएँ गोपालदास नीरज 'गोदानी'।

अर्थ व्यर्थ हो जाएँगे, भागीरथ हों 'भार',
सुखीनाथ रजनीश को लिखना पड़े 'सुनार'।
लिखना पड़े सुनार, लगे सुनने में खोटा,
किंतु सोम ठाकुर जी कहलाएँगे 'सोठा'।
कहँ काका अच्युत धर्मा हो जाएँ 'अधर्मा',
बेकल शर्मा कैसे सहन करें 'बेशर्मा'?

कोर्ट-कचहरी-बैंक में मच जाएगा शोर,
चोखेमल रजपूत जब स्वयं लिखेंगे 'चोर'।
स्वयं लिखेंगे चोर, हँसी हो खुल्लमखुल्ला,
मिस्टर मुन्नीलाल पुकारे जाएँ 'मुल्ला'।
बड़े नाम को छोटा किया, हो गया खोटा,
लोचन टालीवाल करे हस्ताक्षर 'लोटा'।

कीर्ति नष्ट हो जाएगी, कीर्तिचंद हों 'कीच',
नीकचंद संक्षिप्त में बन जाएँगे 'लीच'।
बन जाएँगे नीच, मिलाएँ जब तुकमिल्ला,
पांडे पित्तीलाल लिखे जाएँगे 'पिल्ला'।
कौशल जी आचार्य बिचारे होंगे 'कौआ',
नौबतमल आढ़ती पुकारे जाएँ 'नौआ'।

कुछ लोगों के हैं बड़े लंबे-चौड़े नाम,
ढाई गज का नाम है, दो अंगुल का काम।
दो अंगुल का काम, अचानक दर्शन पाए,
श्री नारायणलाल यतींद्र कथक्कड़ आए।
चारों शब्दों को लेकर जब शॉर्ट बनाया,
तो उनका संक्षिप्त नाम 'नालायक' पाया।

जान-बूझकर व्यर्थ ही क्यों होते बदनाम,
उतना दुखदायी बने, जितना लंबा नाम।
जितना लंबा नाम, रखो छोटे से छोटा,
दो अक्षर से अधिक नाम होता है खोटा।
सूक्ष्म नाम पर कभी नहीं पड़ सकता डाका,
'काका' को उल्टो-पल्टो, फिर भी है काका।

❑

बनारसी साड़ी

कवि-सम्मेलन के लिए बन्यौ अचानक प्लान,
काकी के बिछुआ बजे, खड़े हो गए कान।
खड़े हो गए कान, 'रहस्य छुपाय रहे हो,
सब जानूँ मैं, आज बनारस जाय रहे हो।
'काका' बनिकै व्यर्थ थुकायो जग में तुमने,
कबहु बनारस की साड़ी नहिं बाँधी हमने।

'हे भगवन्, सौगंध मैं आज दिवाऊँ तोहि,
कवि-पत्नी मत बनइयो, काहु जनम में मोहि।
काहु जनम में मोहि, रखें मतलब की यारी,
छोटी-छोटी माँग न पूरी भई हमारी।'
श्वास खींच कें, आँख मींच आँसू ढरकाए,
असली गालन पै नकली मोती लुढ़काए।

शांत है गयो क्रोध तब, मारी हमने चोट,
'साड़िन में खरचूँ सबहिं, सम्मेलन के नोट।'
'सम्मेलन के नोट, हाय ऐसी मत करियों,
खबरदार द्वै साड़ी सों जादा मत लइयों।
हैं बनारसी ठग प्रसिद्ध तुम सूदे-साधे,
जितने माँगें दाम लगइयों बासों आधे।'

गाँठ बाँध उनके वचन, पहुँचे चौक बजार,
देख्यौ एक दुकान पै, साड़िन कौ अंबार।
साड़िन कौ अंबार, डिजाइन बीस दिखाए,
छाँटी साड़ी एक दाम अस्सी बतलाए।
घरवारी की चेतावनी ध्यान में आई,
कर आधी कीमत, हमने चालीस लगाई।

दुकनदार कहिबे लग्यौ, 'लेनी हो तो लेउ,
मोल-तोल कों छोड़ के, साठ रुपैया देउ।'
'साठ रुपैया देउ? जँची नहिं हमको भैया,
स्वीकारौ तौ दैदें तुमवूँक्त तीस रुपैया?'
घटते-घटते जब पचास पै लाला आए,
हमने फिर आधे करकें, पच्चीस लगाए।

लाला कौ जरि-पजरि कें, ज्ञान है गयौ लुप्त,
मारी साड़ी फेंक कें, लै जा मामा मुफ्त!
लै जा मामा मुफ्त, कहै काका सौं मामा?

लाला, तू दूकानदार है या पाजामा?
अपने सिद्धांतन पै काका अडिग रहेंगे,
मुफ्त देय तौ एक नहीं, द्वै साड़ी लेंगे।

भागे जान बचाय कें, दाब जेब के नोट,
आगे एक दुकान पै, देख्यौ साइनबोट।
देख्यौ साइनबोट, नजर वा पै दौड़ाई,
'सूती साड़ी द्वै रुपया, रेशमी अढ़ाई'।
कहँ काका कवि, यह दुकान है सस्ती कितनी,
बेचिंगे हाथरस, लै चलौ दै दे जितनी।

भीतर घुसे दुकान में, बाबू आडर लेउ,
सौ सूती, सौ रेशमी, साड़ी हमवूँक्त देउ।
साड़ी हमवूँक्त देउ, क्षणिक सन्नाटो छायौ,
देख हमारी सूरत, दुकनदार मुसकायौ।
भाँग छानके आयौ है का दाढ़ी वारे?
लिखे बोर्ड पै 'ड्राइ-क्लीन' के रेट हमारे।

❑

लिंग-भेद

‘काका’ से कहने लगे, ठाकुर ठर्रासिंग,
दाढ़ी त्रीलिंग है, ब्लाउज है पुल्लिंग।
ब्लाउज है पुल्लिंग, भयंकर गलती की है,
मर्दों के सिर पर टोपी-पगड़ी रख दी है।
उछला उनका पर्स रो रही अपनी पाकिट,
उनका लहँगा महँगा, सस्ती पति की जाकिट।

देख विरोधाभास को लागी दिल पर चोट,
दोनों ही पुल्लिंग हैं, जम्पर-पेटीकोट।
जम्पर-पेटीकोट, खोट क्या अपना भाई,
त्रीलिंग हैं सभी, पैंट, बुश्शर्ट व टाई।
कहँ काका कविराय, पुरुष की किस्मत खोटी,
मिसरानी का जूड़ा, मिसरानी की चोटी।

दुलहिन का सिंदूर से शोभित हुआ ललाट,
दूल्हा जी के तिलक को रोली हुई अलाट।
रोली हुई अलाट, टॉप्स, लॉकिट, दस्ताने
छल्ला, बिछुआ, हार नाम सब हैं मर्दाने।
कहँ काका कविराय, पहनतीं बाला ‘बाला’
त्रीलिंग जंजीर गले लटकाते लाला।

लाली जी के सामने लाला पकड़ें कान,
उनका घर पुल्लिंग है, त्रीलिंग दुकान।
त्रीलिंग दुकान, नाम यह किसने छाँटे?
काजल, पाउडर हैं पुल्लिंग नाक के काँटे।
कहँ काका कविराय, विधाता-भेद न जाना,
मूँछ मर्द को मिलीं किंतु है नाम जनाना।

ऐसी-ऐसी सैकड़ों, अपने पास मिसाल,
काकी जी का मायका, काका की ससुराल।
काका की ससुराल बचाओ कृष्णमुरारी,
उनका बेलन देख, काँपती छड़ी हमारी।
कैसे जीत सकेंगे उनसे करके झगड़ा,
अपनी चिमटी से उनका चिमटा है तगड़ा।

कवि-सम्मेलन में रहे कवयित्रियों की जीत,
कवि की कविता उखड़ती, जमता उनका गीत।
जमता उनका गीत, हो गई तबियत खट्टी,

हलवाइन का चूल्हा, हलवाई की भट्ठी।
गलत व्याकरण शात्र, हुआ गड़बड़ घोटाला,
'काका' की अलमारी में काकी का ताला।

शून्य विधाता आपका लिंग-भेद का ज्ञान,
बिना व्याकरण पढ़े ही बन बैठे भगवान।
बन बैठे भगवान, दीप में डालो बाती,
उनको नाजुक हृदय, हमें त्रीलिंग छाती।
त्रीलिंग बिल्डिंग, लगाया पुल्लिंग झंडा,
मुर्गा को कलगी दे दी, मुर्गी को अंडा।

मंत्री, संत्री, विधायक सभी शब्द पुल्लिंग,
तो भारत सरकार भी क्यों है त्रीलिंग?
क्यों है त्रीलिंग, समझ में बात न आती,
नब्बे प्रतिशत मर्द, किंतु संसद् कहलाती।
'काका' बस में चढ़े, हो गए नर से नारी,
कंडक्टर ने कहा, आ गई एक सवारी।

शंका करने लग गए लाला गोपीकृष्ण,
काका कवि सुलझाइए एक हमारा प्रश्न।
एक हमारा प्रश्न, होय जब रायशुमारी,
राष्ट्रपति का पद हथिया ले कोई नारी।
लिंग-भेद की गाँठ वहाँ कैसे खोलेंगे?
हमने कहा कि उसे 'राष्ट्रपत्नी' बोलेंगे।

उसी समय कहने लगे शेरसिंह दीवान,
तोती-तोता की भला कैसे हो पहचान?
कैसे हो पहचान, प्रश्न यह भी सुलझा लो,
हमने कहा कि उनके आगे दाना डालो।
असली निर्णय दाना चुगने से ही होता,
चुगती हो तो तोती, चुगता हो तो तोता।

❑

निष्काम हड़ताल

हड़तालों पर कर रहे प्रवचन काक-भुशुंड,
मैनेजर की मेज पर, कीर्तन करो अखंड।
कीर्तन करो अखंड, साथ माइक ले जाओ,
पंचम स्वर में गला फाड़कर कला दिखाओ।
'काका' जो प्राणी इस नुसखे को अजमाए,
अर्थ-धर्म औ' काम-मोक्ष चारों पद पाए।

बीड़ी का कश खींचकर, बोले बाँकेलाल,
सर्वश्रेष्ठ है आजकल, कलम-छोड़ हड़ताल।
कलम छोड़ हड़ताल, शान से दफ्तर जाओ,
भरो हाजिरी, चाय पियो, फिर गप्प लड़ाओ।
'काका' यह हड़ताल शुद्ध 'निष्काम' कहाती,
बिना काम के ही तनुखा सीधी हो जाती।

❑

नेता-नीति

नेता समझाने लगे, सुनो बुलाकीदास,
सूखा और अकाल से, मत हो कभी उदास।
मत हो कभी उदास, धैर्य रक्खो सुख-दुख में,
कुछ भी नहीं असंभव, इस वैज्ञानिक युग में।
ले लो ऐनक हरे रंग के शीशे वाली,
जिधर देखिए उधर दिखाई दे हरियाली।

❑

बर्थ-कंट्रोल

यात्री बोले अकड़कर, इसका क्या है अर्थ,
लेट रहे हो घेरकर चार सीट की बर्थ।
चार सीट की बर्थ, आदमी खड़े हुए हैं,
आप मगर की तरह मजे में पड़े हुए हैं।
'कहँ 'काका' कवि, हल्ला सुनकर टी-टी आया,
हमने लेटे ही लेटे उसको समझाया।

नेता सब चिल्ला रहे पीट-पीटकर ढोल,
जितना भी तुम कर सको, करो 'बर्थ-कंट्रोल'।
करो 'बर्थ-कंट्रोल', अर्थ को समझो बाबू,
इसीलिए तो किया बर्थ पर हमने काबू।
कहँ 'काका', उद्धार देश का कर जाऊँगा,
नहीं हटूँगा, इसी बर्थ पर मर जाऊँगा।

❑

रिश्वत

कूटनीति मंथन करी, प्राप्त हुआ यह ज्ञान,
लोहे से लोहा कटे, यह सिद्धांत प्रमान।
यह सिद्धांत प्रमान, जहर से जहर मारिए,
चुभ जाए काँटा, काँटे से ही निकालिए।
कहँ काका कवि, काँप रहा क्यों रिश्वत लेकर,
रिश्वत पकड़ी जाए छूट जा रिश्वत देकर।

फाइल-महिमा

फाइल, तू बड़भागिनी, कौन तपस्या कीन?
नेता अफसर क्लर्क सब, हैं तेरे आधीन।
हैं तेरे आधीन, मिनिस्टर बाहर जाते,
पत्नी को घर छोड़, साथ तुझको ले जाते।
कहँ 'काका' वादी-प्रतिवादी हा-हा खाएँ,
जज, वकील औ' जिलाधीश जी, शीश नवाएँ।

कोर्ट-कचहरी, दफ्तरों में फाइल की धूम,
पूजा तेरी सब करें, हों उदार या सूम।
हों उदार या सूम, 'दक्षिणा' लेकर आते,
तब बाबू फाइल के, दर्शन उन्हें कराते।
कहँ 'काका', तहसील, फौजदारी, दीवानी,
चहुँ दिशि तेरा राज, बनी बैठी पटरानी।

लाला, बाबू, बौहरे, संत, महंत, अमीर,
तेरे फीते में बँधी, लाखों की तकदीर।
लाखों की तकदीर, कभी तू खो जाती है,
तो ऑफिस में, महाप्रलय-सी हो जाती है।
कहँ 'काका' कविराय, बिगड़ जाती जब फायल,
बड़े-बड़े श्रीमानों को, कर देती घायल।

❑

मिलावट

मनसुख लाल मुनीम से, बोले कुशल किशोर,
मेल-मिलावट के लिए, व्यर्थ मच रहा शोर।
व्यर्थ मच रहा शोर, जानते सब विज्ञानी,
हाइड्रोजन-ऑक्सीजन मिल, बनता पानी।
कहँ 'काका' कविराय, शहद में गुड़ का शीरा,
पहुँचाता है लाभ, गोंद में मिला कतीरा।

वेद-शात्र सबने यही, तथ्य किया स्वीकार,
मिलकर माया-ब्रह्म यह, सृष्टि हुई तैयार।
सृष्टि हुई तैयार, विधाता स्रष्टाचारी,
शब्द बिगड़कर यही हो गया भष्टाचारी।
कहँ 'काका' कर रहे, मिलावट की क्यों निंदा?
चलने दो व्यापार, भजो राधे गोविंदा!

कपट-कंपनी ने किए, पैदा पंद्रह लाख,
मिला-मिला सीमेंट में, फिफ्टी-फिफ्टी राख।
फिफ्टी-फिफ्टी राख, साख को लगा न धक्का,
क्योंकि चढ़ाते रहे, बड़े साहब पर छक्का।
कहँ 'काका', क्या करे, अगर बिल्डिंग फट गई,
फर्म कर दिया खत्म, मुनाफा सभी बँट गई।

कभी घूस खाई नहीं, किया न भष्टाचार,
ऐसे भोंदू जीव को, बार-बार धिक्कार!
बार-बार धिक्कार, व्यर्थ है वह व्यापारी,
माल तौलते समय न जिसने डंडी मारी।
कहँ 'काका', क्या नाम पाएगा ऐसा बंदा,
जिसने किसी संस्था का, न पचाया चंदा?

❑

कार-चमत्कार

(इसमें 64 कार हैं, सरकार)

अहंकार जी ने कहा लेकर एक डकार,
कितने कार प्रकार हैं, इस पर करें विचार।
इस पर करें विचार, कार को नमस्कार है,
ओंकार में निर्विकार में व्याप्त कार है।
निरंकार या निराकार का चक्कर छोड़ो,
कलियुग में साकार ब्रह्म से नाता जोड़ो।

मजिस्टेट के कोर्ट में, होने लगी पुकार,
पेशकार के सामने पहुँचा पैरोकार।
पहुँचा पैरोकार, प्रभो उपकार कीजिए,
आया एक शिकार, उसे स्वीकार कीजिए।
पुरस्कार है यह, इससे इनकार न करिए,
साधिकार सुखकार नोट पाकिट में धरिए।

तदाकार हो जाइए, तजकर मनोविकार,
सरोकार क्या कौन पर, किसका है अधिकार?
किसका है अधिकार, आपसे हमें प्यार है,
पूर्व जन्म के संस्कार का चमत्कार है।
पत्रकार अपकार करे प्रतिकार न करिए,
काव्यकार औ' व्यंग्यकार से बचकर रहिए।

पड़े कला के फेर में चित्रकार-छविकार,
नृत्यकार जी रट रहे, कत्थक के 'तथकार'।
कत्थक के तथकार, बिचारे गीतकार जी,
करें प्रतीक्षा, नहीं मिले संगीतकार जी।
कलाकार, बेकार सड़क पर घूम रहे हैं,
साहूकार सेफ से चिपके झूम रहे हैं।

'बद' अच्छा लेकिन बुरा होता है बदकार,
मूर्धन्य मक्कार हैं, गुरु भूदराकार।
गुरु भूदराकार, आप तो जानकार हैं,
उनके चेले उच्चकोटि के चाटुकार हैं।
श्री भष्टालंकार तख्त पर बैठे जब तक,
अंधकार यह दूर नहीं हो सकता तब तक।

ताऊजी थे तबलिया, मामाजी, मुख्तार,

बीनकार थे बापजी, दादा लेखाकार।
दादा लेखाकार, बनी तकदीर हमारी,
करी वकालत पास, हुए उत्तराधिकारी।
पुरखाओं की मिक्श्चर-कल्चर निभा रहे हैं,
मुवक्किलों के सर पर तबला बजा रहे हैं।

पड़ी नहीं जिस पर कभी, पत्नी की फटकार,
उस भौंदू भरतार को लाख बार धिक्कार।
लाख बार धिक्कार, न हाहाकार कीजिए,
तिरस्कार दुतकार सभी का स्वाद लीजिए।
बहिष्कार कर दें तो भी हिम्मत मत हारो,
वे मारें फुफकार आप उनको पुचकारो।

काकीजी की कर रहे काका जैजैकार,
तुकमिल्ला कुछ कार के बतला दो सरकार।
बतला दो सरकार, चपल नैना मटकाए,
अलंकार झंकार और टंकार बताए।
'ड्राइंग के दुकानदार पर जल्द जाइए,
मुन्ने को दरकार, एक परकार लाइए।'

❑

कर्जा

जप-तप-तीरथ व्यर्थ हैं, व्यर्थ यज्ञ औ' भोग,
कर्जा लेकर खाइए, नितप्रति मोहनभोग।
नितप्रति मोहनभोग, करो काया की पूजा,
आत्मयज्ञ से बढ़कर यज्ञ नहीं है दूजा।
कहँ 'काका' कविराय, नाम कुछ रोशन कर जा,
मरना तो निश्चित है, 'कर्जा' लेकर मर जा।

सुपुत्र

पढ़-पढ़कर पत्थर भए, लिख-लिखकर कमजोर,
चढ़ जा बेटा छत्त पर, ले पतंग अरु डोर।
ले पतंग अरु डोर, दनादन पेंच लड़ावै,
पानी अच्छा लगे न उसको, रोटी भावै।
कहँ 'काका' कवि, प्यास लगै तो पीवै बीड़ी,
ऐसा पूत सपूत, तार दे सातों पीढ़ी।

❑

चोरी की रपट

घूरे खाँ के घर हुई, चोरी आधी रात,
कपड़े-बरतन ले गए, छोड़े तवा-परात।
छोड़े तवा-परात, सुबह थाने को धाए,
क्या-क्या चीज गई हैं, सबके नाम लिखाए।
आँसू भरकर कहा-'महरबानी यह कीजै,
तवा-परात बचे हैं, इनको भी लिख लीजै'।

कोतवाल कहने लगा, करके आँखें लाल,
'उसको क्यों लिखवा रहा, नहीं गया जो माल'।
नहीं गया जो माल, मियाँ मिमियाकर बोला-
'मैंने अपना दिल हुजूर के आगे खोला।
मुंशी जी का इंतजाम, किस तरह करूँगा,
तवा-परात बेचकर 'रपट-लिखाई' दूँगा'।

❑

लोकतंत्रीय प्रेम

ऋषि-मुनि-साधू-संत सब, किया प्रेम गुण गान,
प्रेम रूप यह जगत् है, प्रेम रूप भगवान।
प्रेम रूप भगवान, प्रेम का पता लगाया,
'काका' ने कलियुगी प्रेम सर्वोत्तम पाया।
गले मिलो तब दो हिस्सों में प्रेम बाँट लो,
करो हृदय से प्रेम, हाथ से जेब काट लो।

❑

चुनाव संग्राम

बोले अर्जुनसिंह से, नेता कृष्णकुमार,
चल चुनाव-संग्राम में कर कौरव-संहार।
कर कौरव-संहार, छोड़ शंका-आशंका,
दुश्मन-दल थर्राय, विजय का बाजे डंका।
मिली न पार्टी टिकट, उदासी छाई कैसी,
महाबली निर्दली, टिकट की ऐसी-तैसी।

❑

अर्जुन उवाच

उन मित्रों से किस तरह, लड़ पाऊँगा नाथ,
लाठी खाई जेल में, पिटे हमारे साथ?
पिटे हमारे साथ, निकट संबंधी कोई,
विरोधियों में चचा-भतीजे हैं बहनोई।
कुलघाती जीवन से मरण श्रेष्ठ गोविंदा,
कैसे करूँ चुनाव-सभा में इनकी निंदा।

होश सँभाला, तभी से बापू का हूँ भक्त,
नस-नस में भन्ना रहा, देशभक्ति का रक्त।
देशभक्ति का रक्त, तख्त पर मुझे बिठाया,
उन स्वजनों से लड़ूँ, तर्क यह समझ न पाया।
झूठ कपट, छलछंद इलेक्शन की परिभाषा,
इन दुष्कर्मों की मुझसे मत रखिए आशा।

अंतरात्मा कह रही, है यह कार्य अशिष्ट,
प्रभु-चरणों में फेंक दी, उसने वोटर लिस्ट।
उसने वोटर लिस्ट, चल दिया मुँह लटकाकर,
बैठ गया इक ओर, जीप में पीछे जाकर।
समझ गए श्रीकृष्ण, मोह अर्जुन पर छाया,
मंद-मंद मुसकान मार, उसको समझाया।

❑

कृष्ण उवाच

‘कर्तव्यों से हट रहा, मूरख अर्जुनसिंग,
क्या तेरे माइंड की, लूज हुई स्प्रिंग?
लूज हुई स्प्रिंग, करे क्यों मन को छोटा,
लिये खड़ा जयमाल अखाड़ा, बाँध लँगोटा।
विजयश्री कर प्राप्त, जमा सत्ता पर आसन,
चतुर सदा जनता पर करते आए शासन।

प्रलयकाल में नष्ट हों, धरा-चंद्र आदित्य,
नेता-मंत्रि अनित्य हैं, आत्मतत्त्व है नित्य।
आत्मतत्त्व है नित्य, न इसको अग्नि जलाए,
वायु सुखा नहिं सके, न जल गीला कर पाए।
जब चाहे ‘दल-बदल’ करे नेता की आत्मा,
इसमें किंचित् दखल नहीं देता परमात्मा।

यह संसार असार है, झूठे चित्र-विचित्र,
कौन किसी का शत्रु है, कौन किसी का मित्र?
कौन किसी का मित्र, व्यर्थ है रिश्ता-नाता,
नहीं किसी का ससुर, नहीं कोई जामाता।
तुझसे ज्यादा ज्ञानी, कलियुग के मिस-मिस्टर,
आज प्रेमिका बनी कि जो कल तक थी सिस्टर।

मानव द्वारा हुए सब, रिश्ते कंट्रीब्यूट,
फिल्मी रिश्तों की तरह, ये रिश्ते हैं झूठ।
ये रिश्ते हैं झूठ, प्रमाणों से समझाऊँ,
यदि तू भूल गया है तो सुन, याद दिलाऊँ।
‘मदर इंडिया’ में जो था ‘नरगिस’ का बेटा,
वही सुनीलदत्त उसका शौहर बन बैठा।

एक ‘जंगली’ फिल्म थी, जो देखी उस रात,
इश्क लड़ाती ‘सायरा’ प्रिय ‘शम्मी’ के साथ।
प्रिय ‘शम्मी’ के साथ, किसी पर लगा न धब्बा,
अब ‘जमीर’ में वही ‘सायरा’ का है अब्बा।
नाते-रिश्तों के चक्कर में मत पड़ बच्चा,
केवल आत्मा-परमात्मा का नाता सच्चा।

मैं, वह, तू सब एक हैं, बिखरी बुद्धि समेट,
तंबाकू वर्जीनियाँ, भिन्न-भिन्न सिगरेट।
भिन्न-भिन्न सिगरेट, याद अर्जुन को आई,

‘तलब लगी है प्रभो! निकालो दियासलाई।’
करने लगा विचार, धुएँ के छोड़े छल्ले,
बोले कृष्णकुमार, ‘पड़ा कुछ तेरे पल्ले?’

पार्थ! स्वार्थ को छोड़कर देख देश की ओर,
अनासक्त रहकर सखे, वोटर-वोट बटोर।
वोटर-वोट बटोर, थामकर डंडा-झंडा,
आगे-पीछे चलें वीर-बाँके मुसटंडा।
कर्म-युद्ध में जो प्राणी डरता, सो मरता,
भय दिखलाए बिना, प्रीत नहिं कोई करता।

बैठ जाएगा अगर तू, नहीं करे संग्राम,
‘अर्जुन पैसा खा गया’ लग जाए इलजाम।
लग जाए इलजाम, लोकनिंदा को लेकर,
मिलती है अपकीर्ति, मरण से भी जो बदतर।
उठ अर्जुन! निष्काम कर्म से मुख क्यों मोड़े?
धार चुनावी-धनुष, विजय के दौड़ें घोड़े।

❑

अर्जुन उवाच

‘आत्मा सबमें एक है, वही जीवन की नींव,
भिन्न-भिन्न फिर आचरण, क्यों करते हैं जीव?
क्यों करते हैं जीव, सीट आत्मा ले लेती,
जज-आत्मा फिर उसे कैंसिल क्यों कर देती?
शंकाओं से धुँधला हुआ, हृदय का दर्पन,
फेंको ज्ञान-प्रकाश, शरण में आया भगवन।

शंकाओं के हो रहे, मन में उल्कापात,
त्याग और संन्यास में क्या अंतर है नाथ?
क्या अंतर है नाथ, कृपा की डोर बढ़ाओ,
पृथक्त-पृथक्त दोनों के अभिप्राय समझाओ।
अर्जुन का यह प्रश्न कृष्ण के मन को भाया,
नेताजी ने प्रत्याशी को यों समझाया।

❑

कृष्ण उवाच

त्याग और संन्यास के अलग-अलग हैं भाग,
राजस-तामस-सात्त्विक, तीन तरह के त्याग।
तीन तरह के त्याग, प्रथम राजस बतलाएँ,
स्वेच्छा से जो दस प्रतिशत वेतन कटवाएँ।
बँगला छीना जाए, त्याग तामस पहिचानो,
रिश्वत को ठुकराय, सात्त्विक उसको मानो।

कहते इस संदर्भ में, राजनीति के घाघ,
प्रधानमंत्री के लिए, आवश्यक नहिं त्याग।
आवश्यक नहिं त्याग, पड़ें क्यों व्यर्थ क्लेश में,
यदि इस्तीफा देंय, मचे गड़बड़ी देश में।
देश-धर्म-रक्षार्थ, चाहिए पद पर रहना,
दुष्ट जनों से जन-गण-धन की रक्षा करना।

अज्ञानी को भासता, ज्यों रस्सी में साँप,
झूठा देहाभास यह, ज्ञान-चक्षु से भाँप।
ज्ञान-चक्षु से भाँप, भंति में पड़े हुए हैं,
जीवित दीख रहे तुझको वे मरे हुए हैं।
मध्यावधि चुनाव-नाटक, देखा था तुमने,
मुर्दों के मत प्राप्त किए हज्जारों हमने।

राजनीति से ले लिया, जिसने भी संन्यास,
कोई पूँजीपति उसे, नहीं डालता घास।
नहीं डालता घास, बोलती तूती जिनकी,
अब मुँह लेते फेर, देखकर सूरत उनकी।
कूटनीति एक्सपर्ट, बुजुर्गों का है कहना,
दम में दम जब तलक, इलेक्शन लड़ते रहना।

जो फिल्मी-अभिनेत्रियाँ, कल तक थीं मशहूर,
आज बिचारी उड़ गइऔ, जैसे धूप-कपूर।
जैसे धूप-कपूर, साधना, बबिता, माला,
हुइऔ उपेक्षित, कोई नहीं पूछनेवाला।
देवानंद, अशोक न अभिनय से घबराएँ,
इसीलिए ये बूढ़े 'सदाबहार' कहाएँ।

अब अर्जुन सुन ध्यान से कलियुग का संन्यास,
रँगे हुए कपड़े पहिन, करते भोग-विलास।
करते भोग-विलास, यही राजस संन्यासी,

हाथी-मोटर-कार, आय भी अच्छी खासी।
एक टाँग पर खड़ा वुंक्तभ में ताने छाता,
दे सकता हो श्राप, वही 'तामसी' कहाता।

अब 'सात्त्विक' संन्यास के, लक्षण कर ले नोट,
तंग अभावों से हुए, लगी हृदय पर चोट।
लगी हृदय पर चोट, पुत्र-पत्नी से लड़कर,
भाग चले घर छोड़, क्रोध के वश में पड़कर।
पहुँचे हरिद्वार, भक्तों पर धाक जमाई,
अन्न-त्याग सेवन करते फल-दूध-मलाई।

❑

उपसंहार

प्रभु के इंजेक्शनों से, पुष्ट हो गया हार्ट,
अर्जुन ने स्वीकृति दई, जीप हुई स्टार्ट।
जीप हुई स्टार्ट, साथ लटकाए चमचे,
ड्राइव करते कृष्ण, बाँटते अर्जुन पर्चे।
काकी बोली, छोड़ो जी यह कथा-कहानी,
नल हो जाएँ बंद, घड़ों में भर लो पानी।

❑

बेचारा अध्यापक

कौन जन्म के हुए प्रभु, उदय हमारे पाप,
अध्यापक बन, कर रहे, प्रायश्चित्त चुपचाप।
प्रायश्चित्त चुपचाप, छात्र-जीवन जब पाया,
हुई तनिक-सी भूल, गुरु का डंडा खाया।
पिटना जारी है अध्यापक बनते-बनते,
तब गुरु से पिटते थे, अब चेलों से पिटते।

❑

नेत्रदान

नेत्रदान के पक्ष में थे डॉक्टर 'रजदान',
हाथ जोड़ हमने कहा-'क्षमा करें श्रीमान।'
क्षमा करें श्रीमान, लगाकर आँख हमारी,
सूरदास ने किसी सुघड़ नारी पर मारी।
तो बतलाओ उस अंधे का, क्या बिगड़ेगा,
आँख हमारी, हमको ही तो पाप लगेगा।

❑

छात्राध्यक्ष का लक्ष्य

माइ डियर छात्र भाइयो!
चाइनीज पैंट और रशियन टाइयो!
आपका यह सेवक,
आपका यह दास
जिसके ग्रंड फादर थे डॉ. सत्यानाश,
छात्रसंघ के अध्यक्षीय चुनाव के लिए
आमादा है,
कॉलेज का रजिस्टर्ड दादा है।

अपने जूते और आपके बलबूते पर
चुनाव में हो रहा हूँ खड़ा,
संघर्ष है सख्त, मुकाबिला है तगड़ा।
विरोधियों के आगे अड़ा दूँगा सीना,
आपके खून की जगह बहा दूँगा पसीना।
हमारे समर्थक साथी मिस्टर घोष
खाकर के जोश,
मार दें एक पूँक्तक,
तो कॉलिज की बिल्डिंग के
उड़ जाएँ टूक-टूक।

कितने शर्म की बात है दोस्तो!
हमारे ऐसे प्रतिष्ठित छात्र
प्रिंसिपल के रूम में जाते हैं तो
पूछना पड़ता है गिड़गिड़ाकर-
'मे आई कम इन सर?'
लानत है इस परंपरा पर!

मेरे अध्यक्ष बनने के बाद
कोई भी छात्र
प्रिंसिपल के ऑफिस में जाएँगे
तो प्रिंसिपल साब खड़े हो जाएँगे।

क्लास-टीचर या प्रोफेसर
कक्षा में प्रवेश करते ही
प्रत्येक विद्यार्थी के पैर छुएगा
तब पढ़ाएगा
वरना डिसमिस कर दिया जाएगा।
आज के शुष्क और खुश्क प्रोफेसरों से
पढ़ते-पढ़ते हम हो गए हैं बोर,
गौर कीजिए हमारी नई योजना की ओर
हमको पढ़ाने के लिए
क्यों न रखी जाएँ सुंदरी प्राध्यापिकाएँ?
जिनके दर्शन-मात्र से
हृदय की
मुरझाई हुई कलिकाएँ
खिल जाएँ।

उनकी कृपा से बिना परिश्रम के ही
हो सकते हैं पास,
साक्षी है इतिहास।
सौंदर्य और शृंगार के माध्यम से
अमर हो गए विद्यापति ऐंड कालिदास
मित्रो! भारत के भविष्य को
चेंज करने वाले चित्रो!
खराब हो गए हैं हमारे दिमाग
रटते-रटते, गणित, कैमिस्ट्री और भूगोल,
आग लगा दो इनमें
छिड़क कर पैट्रोल!

'यस, दिस इज द फैक्ट
ऑल दीज आर बोर सबजेक्ट।'
पुरानी शिक्षा-पद्धति एकदम सड़ गई है,
दुनिया बहुत आगे बढ़ गई है।

कितनी उन्नति पर है
आज का फिल्मी विज्ञान?
इस पर ध्यान क्यों नहीं देते,
शिक्षाविद् श्रीमान?

नॉलेज होनी चाहिए कॉलेज के
प्रत्येक विद्यार्थी को,

‘रेखा’ के अंग पर
कौन से रंग की साड़ी
खिलती है?

श्रीदेवी के घुँघरुओं की झनकार से
क्या प्रेरणा मिलती है?
कितने इंच का व्यास है
जुही की कमर का?
क्या नाम है राजश्री के
अमरीकन शौहर का?
बता सकते हो-
‘पूजा भट्ट’ किसकी पूजा करती है?
और जुही चावला को
कौन से चावल पसंद हैं?
कितनी दिलचस्पी लेंगे विद्यार्थी
इन सवालों में?
क्या अंतर है ‘साधना कट’
और ‘बबिता कट’ बालों में?

भाई जान!
कितना सीमित है हमारा फिल्मी ज्ञान?
हमसे अधिक जानता है वह लल्लू भड़भूजा,
फौरन बता देगा
कौन सी फिल्म में आ रही है तनूजा।

तभी जाग्रत् होगी हमारी सुषुप्त चेतना,
जब प्रश्नपत्रों पर आएगी
लीना और टीना की तुलनात्मक विवेचना।

लेकिन यह संभव होगा कब?
मुझे अध्यक्ष बना दोगे तब।

❑

राष्ट्रीय अजगर

तुम तो व्यर्थ की बातें करते हो संपादक जी!
राजनीति को समझते नहीं,
तर्क करते हो,
इश्क करने की तमीज नहीं,
आहें भरते हो!

देखो बंधु!
तुम हो केवल साहित्य-स्रष्टा
और हम ठहरे राजनीतिज्ञ,
भविष्य-द्रष्टा
इतना अंतर है हममें और तुममें,
जितना देशी और विलायती
कुत्ते की दुम में!
बुरा मत मानना दोस्त!
स्वार्थ और सिद्धांत में
जब होती है टक्कर,
तो बड़े-बड़े तीसमारखाँ
काट जाते हैं चक्कर!

मैं पूछता हूँ
राजभाषा-विधेयक पास हो गया
तो क्या प्रलय हो गई यार?
शोर मचाते हो बेकार!
वह तो होना ही था
हिंदी को दासी बनकर रोना ही था!
रही संविधान में संशोधन की बात
सो वह भी ठीक ही हुआ
जो वस्तु जिसने बनाई,
वह उसे तोड़ सकता है
मोड़ सकता है,
घटा सकता है,
जोड़ सकता है।
कल्लू कुम्हार मूड में आ जाए तो
अपने स्वनिर्मित घड़े को
फोड़ सकता है,
'ही इज ऑथोराइज्ड'

उसे अधिकार है ऐसा करने का
फिर क्या कारण है डरने का?
रामायण में स्पष्ट लिखा है भाई
‘समरथ को नहिं दोष गुसाई’।

क्या कहा... समर्थन?
हाँ-हाँ, चुनाव लड़ते समय हमने किया था
समर्थन हिंदी का
और अब करते हैं अँगरेजी का
अवसर आएगा तो पक्ष लेंगे
तेलुगू, तमिल, उर्दू और उड़िया का
शराब की बोतल
और भंग की पुडिया का।

सौ बातों की एक बात है तात!
दूल्हा के इशारे पर चलती है बारात
अपन तो
जैसा देखते हैं सरकार का रंग
वैसी ही उड़ाते हैं पतंग।
अब तुम्हीं बताओ डियर!
हिंदी की हिमायत करके
मैं पार्टी से विद्रोह करता?
पद छोड़कर भूखों मरता?
कहीं फँस जाता रिश्वत के कांड में
और चरनी पड़ती जेल की घास
तो क्या बचा लेते हिंदी के हिमायती
सेठ गोविंददास?
इसलिए हे अँगरेजी रानी!
तुम्हारी जय-जयकार!
आलीशान कोठी, चमचमाती कार
फ्री-होल्ड बिजली, मुफ्त का पानी
थैलियाँ, दावत, मानपत्र, मेहमानी,
चुनाव जीत जाएँ, तो क्या कर लेंगे
आडवाणी?

यहाँ तो अब तक जैसी घुटती रही है
वैसी ही घुटेगी
आदत जो पड़ गई, नहीं वह छुटेगी

क्योंकि हम अजर हैं, अमर हैं
राष्ट्रीय अजगर हैं!

❑

पाँच विचित्र चित्र

: 1 :
लाला घोंचूराम, फटी
धोती और मैले कुरते में
सात्त्विक जीवन बिताते हुए,
इस असार संसार से कर गए कूच।
आँसू टपकाते हुए बेटे
ने बिस्तर टटोला,
फड़क उठे उसके होंठ,
तकिए में भरे हुए थे, रुई की जगह नोट।
क्या हुआ यह जरा सोचना?
इसे कहते हैं बचत योजना।

: 2 :
चार लुटेरे, चालीस यात्रियों को लूटकर
कूद गए टेन से खींचकर चैन,
कुछ नहीं बोले पुलिस मैन।
अरे भाई,
इधर से पैसा उधर हो जाएगा,
तभी तो देश में समाजवाद आएगा।

: 3 :
सात सौ से अधिक पानेवाले क्लर्क पर,
तनुखा से पहले ही कट जाता है इनकमटैक्स,
दिल्ली का पकौड़ीवाला लाला
सौ रुपए डेली कमाता है,
न बही है, न खाता है
इंसपेक्टर आता है,
एक प्लेट चाटकर, दूसरी घर ले जाता है।
ऐसा भाईचारा और कहीं है?
कौन कहता है देश में एकता नहीं है?

: 4 :
कम्युनिज्म के फंदे में फँसा हुआ
पूँजीवाद बड़बड़ा रहा है,
काले पैसे का कल्पवृक्ष लड़खड़ा रहा है।
स्वास्थ्य विभाग के ताऊ की
बेटी की शादी में,

नवक्तली दवा बेचनेवाले सेठजी,
रेफ्रीजरेटर और टेलीविजन दे रहे हैं,
ताऊजी मजबूर होकर ले रहे हैं।
नहीं समझे आप?
कन्यादान में दखल देना है पाप।

: 5 :
हमारे पड़ोसी खाँ साहब 'खस-खस'
उनका उसूल है 'दो या तीन बीबी बस'
डेढ़ दर्जन बच्चे किलोल कर रहे हैं,
परिवार-नियोजन की खाई को भर रहे हैं,
उनके लिए चौथी शादी की भी छूट,
हमारे लिए नसबंदी और लूप।
खामोश रहिए—
राजनीति को आप नहीं समझते हैं,
इसे 'धर्म-निरपेक्षिता' कहते हैं।

❑

भगवान को ज्ञापन

पंद्रह अगस्त को-
हास्यरसी कवियों का लेकर डेपूटेशन,
पहुँच गए हम बैवुंक्तठधाम स्टेशन।
गेट पर खड़ा हुआ दरबान
हो गया हक्का-बक्का,
घुस गए अंदर
देकर उसे धक्का।
नारे लगाए—
जय नारायण, जय परमात्मा,
ज्ञापन लेकर आई हैं कुछ आत्मा।
अंदर से आवाज आई-
'क्या शोर-शराबा है,
कौन हैं ये दुस्साहसी?'
हमने कहा- 'काका हाथरसी, बेधड़क बनारसी,
अल्लड़-भुल्लड़, डंठल-कुल्लड़,
सनीचर-फटीचर-भौंपू-हुल्लड़।'
'किसलिए आए हैं?'
'क्रांतिकारी कल्पनाएँ लाए हैं।
सांसारिक नर-नारी-
नवीनता की ओर बढ़ रहे हैं,
आप बेखबर होकर
क्षीर-सागर में शयन कर रहे हैं।
यही दशा रही तो
विरोधी दल हथिया लेगा सत्ता,
कट जाएगा बैवुंक्तठ से आपका पत्ता।
जन-गण-मन पर डालने के लिए इंप्रेशन,
नोट कीजिए हमारे सप्तसूत्री सजेशन-

1. मानव-बॉडी का वर्तमान ढाँचा
'आउट आफ डेट' हो गया है,
इसे बदल दीजिए,
संविधान में संशोधन कीजिए।

2. मनुष्यों को दे दिए हैं आपने दो-दो कान
इनका दुरुपयोग करता है इनसान,
किसी बात को गंभीरता से नहीं लेता है,

इस कान से सुनकर
उस कान से निकाल देता है।
आइंदा के लिए नोट कीजिए,
एक आदमी को एक ही कान दीजिए।

3. कान के बदले में-
सिर के चारों ओर
आँखें फिट कर दीजिए चार,
सौंदर्य को कनखियों से
नहीं देखना पड़ेगा धर्मावतार!

4. नेत्रों की ज्योति घटती जा रही है,
इनमें एक्सरे वाले,
ऐसे लैंस कीजिए एडजस्ट,
नेताओं की अंतरात्मा दीख सके स्पष्ट।
जनता को धोखा नहीं दे सकेंगे,
दलबदलू वोट नहीं ले सकेंगे।

5. महिलाओं की जिह्वा
जरूरत से ज्यादा लचीली बना दी है आपने।
बोलती हैं तो बोलती ही चली जाती हैं ऐसे,
रोटरी मशीन चल रही हो जैसे।
जहाँ इकट्ठी हो जाएँ देवियाँ चार,
कोई प्रोग्राम नहीं जम सकता सरकार!
इनकी जीभ-
कुछ छोटी कर दीजिए
या मोटी कर दीजिए।

6. छात्राओं पर आवाजकशी करते हैं गुंडे
उनकी सुरक्षा का प्रंध कीजिए,
प्रत्येक लड़की के सिर में-
दो-दो सींग फिट कर दीजिए।
कॉलेज हो या मार्वेक्कट
जहाँ भी कोई 'छेड़े', फाड़ दें उसका पेट।
7. शासन में आकर्षण लाने के लिए
समाजवादी वक्तदम उठाइए दीनानाथ!
आप 'चतुर्भुज' बने हुए हैं,
हमको केवल दो हाथ?
या तो आप भी दो रखिए

या हमको भी चार दिलवाइए।
ज्ञापन लीजिए,
हस्ताक्षर कीजिए!

अंत में—
बुलाकर हमको एकांत में
चुपके से समझाया भगवान ने-
‘वत्स काका!
जनता को मत भड़काओ,
लो ये दस सहस्र मुद्राएँ
पीओ, खाओ, मौज उड़ाओ।’
हमने कहा-‘गुरु!
स्वतंत्रता की रजत-जयंती मनाएँगे,
पच्चीस हजार लिये बिना नहीं जाएँगे।’

❑

विरोध-प्रदर्शन

‘जय हो विष्णु भगवान!
दीन-दुखियों के प्रंक्तड, लक्ष्मीजी के हसबैंड।’
‘कौन हैं आप लोग?’
‘हम हैं कॉलेज स्टूडेंट!’
(स्टूडैंट शब्द सुनते ही काँप गए भगवान)

‘दरवाजा बंद कर दो दरबान।’
‘इससे कुछ नहीं होगा महाराजा,
तोड़ डालेंगे हम दरवाजा
अधिक नहीं करेंगे वेट,
लखनऊ यूनिवर्सिटी से ज्यादा
मजबूत नहीं है बैवुंक्तठ का गेट।
मारेंगे या मरेंगे,
आपका घेराव करेंगे।
‘इनकलाब जिंदाबाद!’
(लड़के गरम हो गए, भगवान नरम हो गए)
‘आखिर चाहते क्या हो नौजवान?’
‘एक्सक्यूज, कृपानिधान!
हम लोग भीख माँगने नहीं आए हैं,
विरोध-पत्र लाए हैं।

गलत सजेशन आपको दे गए हैं काका
लड़कियों के सींग लगवाकर
हमारे मूलभूत अधिकारों पर डाल रहे हैं डाका’।
(भगवान ने भृकुटि तानी)
‘क्या कहा-मूलभूत अधिकार?’
‘यस धर्मावतार!
क्यों गढ़ते हैं आप सुंदर-सुंदर सुरतियाँ
वंडरफुल मुरतियाँ,
बनाइए उनको-
काली-कलूटी, चामुंडा जैसी

देखनेवालों की हो जाए ऐसी-तैसी।'

'मानस पुत्रो!
अभी तुम बच्चे हो, नीतिशात्र में कच्चे हो,
अगर लड़कियाँ होंगी कुरूप
लड़के होंगे सुंदर-प्रियदर्शी
तो फिर, छोरियाँ छोरों पर करेंगी आवाजकशी,
इसलिए जाओ, विरोध-पत्र हमको दे जाओ
बैवुंक्ठ की संसद् में इसे रखवाएँगे,
तब तक लड़कियों के सींग नहीं लगवाएँगे।
तुम भी अपने वॅक्तरियर को मोड़ दो,
कन्याओं को छेड़ने की आदत छोड़ दो।'

❑

यमराज पर फिल्मी जादू

भगवान यमराज के दरबार का सीन-
न्याय के लिए उपस्थित थीं आत्मा तीन।
दो थीं नारी
एक थी कुमारी।

चित्रगुप्त ने इशारा किया,
प्रथम महिला ने शपथ लेकर अपना बयान दिया-

'मैं नियम से 'रामायण' का करती थी पाठ
माला जपती थी, नित्य एक सौ आठ।
पति से एकादशी का व्रत कराती थी,
इसलिए पतिव्रता कहाती थी।'

इतना कहकर उसने कोर्ट में ही
कीर्तन कर दिया शुरू,
बोर होकर बोले यमराज गुरु-
'बस-बस... ठीक है,
न्यायालय के नियमों की रक्षा करो,
निर्णय की प्रतीक्षा करो!
अगला केस...? करो पेश!'

दूसरी आई एक आधुनिका नारी,
आधी विवाहित, आधी कुमारी।
हिप्पिन जैसे बाल, दार्शनिकों जैसी चाल।
'संसार से विरक्त हूँ,
भगवान की भक्त हूँ।
हजारों प्रेमियों को लताड़ चुकी हूँ,
लाखों लव-लैटर फाड़ चुकी हूँ।
त्याग की महिमा अपार है,
वही मेरे जीवन का सार है।'

चित्रगुप्त की भृकुटी फड़की,
छम-छम करती आई तीसरी लड़की।
(जैसे ब्लैक-आउट में बिजली चमकी)
उसके मादक नयनों से
'सोमरस' टपक रहा था
मुखारविंद स्वर्ण-बिस्कुटों-सा
दमक रहा था,

नृत्य की भाव-मुद्रा बनाकर
हो गई खड़ी-
भगवान भावनाओं में बह गए,
चित्रगुप्त ठगे-से रह गए।
'ना जानूँ 'रामायण', ना जानूँ 'गीता',
मेरा जीवन तो फिल्मों में
नाचते-गाते ही बीता।
नहीं मालूम प्रभो!
क्या धर्म है, क्या है पाप?
दे दीजिए निर्णय, मालिक हैं आप।'
'मालिक' शब्द सुनते ही
यमराज के तन-बदन में
दौड़ गया करेंट,
देने लगे जजमेंटः
'प्रथम केस की धार्मिक महिला को
स्वर्ण-भवन की चाभी दे दो।
दूसरी बाला को
चाँदी के कमरे की चाभी दे दो।
और इस लली को, फिल्मी कली को
ह-ह-ह-हमारे कमरे की ताली दे दो!'

❑

काका की कार

एक शाम की बात सुनाएँ—
खोटे ग्रह-नक्षत्र हमारे,
रोजाना हम बंबा पर ही घूमा करते
उस दिन पहुँचे नहर किनारे।
वहाँ मिल गए बर्मन बाबू
बाँह गले में डाल, कर लिया दिल पर काबू
कहने लगे कि क्यों भई काका,
तुम इतने मशहूर हो गए
दूर-दूर तक जाते कवि-सम्मेलन करने।
फिर भी अब तक कार नहीं ली?
टेनों में धक्के खाते हो,
तुमको शोभा देता ऐसा?
कहाँ धरोगे जोड़-जोड़कर इतना पैसा?
मालूम है अमरीका की जनता का स्तर?
कवि को छोड़ो,
कार वहाँ रहती कुलियों पर।

हम बोले-मालूम है बाबू,
लेकिन हम तो कुली नहीं हैं
भारतीय बुद्धिजीवी पर इतनी रकम कहाँ से आए?
हो पच्चीस हजार जेब में,
तब अच्छी मोटर मिल पाए।
'रहे यार, तुम बिलकुल बुद्धू!' बर्मन बोले।
इतने रुपयों से तो चार गाड़ियाँ लाकर रख दूँ।
बेच रहे हैं अपनी गाड़ी साँवलराम सूतली वाले
दस हजार वे माँग रहे हैं
पट जाएँगे, आठ-सात में
हिम्मत हो तो करूँ बात मैं?'

'नहीं मित्रवर,
तुमको शायद पता नहीं है,
छोटी कारें बना रहा है प्रधानमंत्री का बेटा संजय
जय हो उसकी, ज्ञात हुआ विश्वस्त सूत्र से-
सर्वप्रथम अपना न्यू मॉडल
काका कवि को भेंट करेगा।
हमने भी तो जगह-जगह कवि-सम्मेलन में

इंदिराजी की आरती गाई, जीत कराई।’

हँसकर बोले बर्मन भाई-‘वाह, वाह जी,
जब तक कार बनेगी उनकी,
तब तक आप रहेंगे जिंदा?
भज गोविंदा, भज गोविंदा।’
‘तो बर्मन जी,
हम तो केवल पाँच हजार लगा सकते हैं,
इतने में करवा दो काम,
जय रघुंदन, जय सियाराम!’

तोड़ फैसला हुआ कार का छह हजार में,
घर्र-घर्र का शोर मचाती कार हमारे घर पर आई
भीड़ लग गई, मच गया हल्ला,
हुए इकट्ठे लोग-लुगाई, लल्ली-लल्ला।
हमने पूछा-
‘क्यों बर्मन जी, शोर बहुत करती है गाड़ी?’

‘शोर बहुत करती है गाड़ी?
कभी खरीदी भी है मोटर,
जितना ज्यादा शोर करेगी,
उतनी कम दुर्घटना होगी
भीड़ स्वयं ही हटती जाए,
काई-जैसी फटती जाए
बहरा भी भागे आगे से,
बिना हॉर्न के चले जाइए सर्राटे से।’

‘बिना हॉर्न के?
तो क्या इसमें हॉर्न नहीं है?’
‘हॉर्न बिचारा कैसे बोले,
काम नहीं कर रही बैटरी।’
‘काम नहीं कर रही बैटरी?
लाइट कैसे जलती होगी?’
‘लाइट से क्या मतलब तुमको,
यह तो क्लासिकल गाड़ी है,
देखो कक्कू,
सफर आजकल दिन का ही अच्छा रहता है
कभी रात में नहीं निकलना।
डाकू गोली मार दिया करते टायर में,

गाड़ी का गोबर हो जाए इक फायर में
रही हॉर्न की बात,
पाँच रुपए में लग जाएगा
पौं-पौं वाला (रबड़ का)
लेकिन नहीं जरूरत उसकी
बड़े-बड़े शहरों में होते,
साइलैंस एरिया ऐसे
वहाँ बजा दे कोई हौरन,
गिरफ्तार हो जाए फौरन।

नाम गिरफ्तारी का सुनकर बात मान ली।

'एक प्रश्न और है भाई,
उसकी भी हो जाए सफाई।'
'बोलो-बोलो, जल्दी बोलो?'
'ड्राइवर बाबूसिंह कह रहा-
तेल अधिक खाती है गाड़ी?'
'काका जी तुम बूढ़े हो गए,
फिर भी बातें किए जा रहे बच्चों जैसी।
जितना ज्यादा खाएगा
वह उतना ज्यादा काम करेगा'
तार-तार हो गए तर्क सब, रख ली गाड़ी।
उस दिन घर में लहर खुशी की ऐसी दौड़ी
जैसे हमको सीट मिल गई लोकसभा की।
कूद रहे थे चकला-बेलन,
उछल रहे थे चूल्हे-चाकी
खुश थे बालक, खुश थी काकी
हुआ सवेरा-
चलो बालको तुम्हें घुमा लाएँ बजार में,
धक्के चार लगाते ही स्टार्ट हो गई।
वाह-वाह,
कितनी अच्छी है यह गाड़ी,
धक्कों से ही चल देती है
हमने तो कुछ मोटरकारें
रस्सों से खिंचती देखी हैं
नएगंज से घंटाघर तक,
घंटाघर से नएगंज तक
चक्कर चार लगाए हमने।

खिड़की से बाहर निकाल ली अपनी दाढ़ी,
मालूम हो जाए जनता को,
काका ने ले ली है गाड़ी।
खबर दूसरे दिन की सुनिए-
अखबारों में न्यूज आ गई-
नए बजट में पैट्रोल पर टैक्स बढ़ गया।
जय बमभोले, मूंड मुड़ाते पड़ गए ओले।
फिर भी साहस रक्खा हमने
सोचा, तेल मिला लेंगे मिट्टी का पैट्रोल में
धुआँ तो कुछ बढ़ जाएगा,
औसत वह ही पड़ जाएगा।
दोपहर के तीन बजे थे—
खट-खट की आवाज सुनी,
दरवाजा खोला-
खड़ा हुआ था एक सिपाही वर्दीधारी।
हमने पूछा,
कहिए मिस्टर,
क्या सेवा की जाए तुम्हारी?
बाएँ हाथ से दाइऔ मूँछ ऐंठकर बोला-
कार आपकी इंस्पेक्टर साहब को चाहिए,
मेमसाब को आज आगरा ले जाएँगे फिल्म दिखाने,
पैट्रोल डलवाकर गाड़ी
जल्दी से भिजवा दो थाने।
हमने सोचा-
वाह-वाह यह देश हमारा
गाड़ी तो पीछे आती है, खबर पुलिस को
पहले से ही लग जाती है।
कितने सैंसिटिव हैं भारत के सी.आई.डी.
तभी 'तरुण' कवि बोले हमसे—
बड़े भाग्यशाली हो काका!
कोतवाल ने गाड़ी माँगी, फौरन दे दो
क्यों पड़ते हो पसोपेश में?
मना करो तो फँस जाओगे किसी केस में।
एक कनस्तर तेल पिलाकर
कार रवाना कर दी थाने
चले गए हम खाना खाने।
आधा घंटा बाद सिपाही फिर से आया, बोला-

‘स्टैपनी दीजिए।’
हमने आँख फाड़कर पूछा—
‘स्टैपनी क्या?’
‘क्यों बनते हो,
गाड़ी के मालिक होकर भी नहीं जानते’
हमने कहा-
सिपाही भइया,
अपनी गाड़ी सिर्फ चार पहियों से चलती
कोई नहीं पाँचवाँ पहिया,
लौट गया तत्काल सिपहिया।

मोटर वापस आ जानी थी अर्धरात्रि तक,
घर्र-घर्र की उत्कंठा में
कान लगाए रहे रातभर ऐसे
अपना पूत लौटकर आता हो विदेश से जैसे।
सुबह दस बजे गाड़ी आई
इंस्पेक्टर झल्लाकर बोला-
शर्म नहीं आती है तुमको,
ऐसी रद्दी गाड़ी दे दी
इतना धुआँ छोड़ा इसने,
मेमसाब को उलटी हो गई।
हमने कहा-
उलटी हो गई, तो हम क्या करें हुजूर!
थाने को भेजी थी तब बिलकुल सीधी थी।

❑

रेलमंत्री का थर्डक्लासी स्वप्न

रेलमंत्री ने संतरी को बुलाया एकांत में-
'सुनो मलखान!
जानते हो वेष बदलकर
क्यों घूमते थे अकबर महान?
इसी तरह प्राप्त होता है,
जनजीवन का वास्तविक ज्ञान।
चलोगे हमारे साथ, थर्ड क्लास के सफर का स्वाद लेने?'
संतरी चकित
आधा प्रसन्न, आधा उदास
'हुजूर, आप और थर्डक्लास?'
'धीरे बोलो-
कल सुबह चलना है,
जो भी मुसीबत आए, उसे सहना है।'
इसी मंत्रणा में मंत्रीजी सो गए,
विचार-सागर में खो गए।
भीड़-भाड़ से भरपूर-'दिल्ली जंक्शन'
थर्डक्लास की खिड़की पर
दो सौ गज लंबा क्यू,
पहिले मैं, पीछे तू।
'जेबकतरों से सावधान' का बोर्ड देखकर
यात्रियों ने अपनी-अपनी पॉकिट सँभाली,
कलाकारों ने भाँप लिया,
किसकी भरी है, किसकी खाली।
जिन स्टेशनों पर ऐसे बोर्ड नहीं लगाती सरकार,
वहाँ अपने खर्चे से लगवा देते हैं पॉकिटमार।

डिब्बे खचाखच, दरवाजे ठसाठस,
मंत्रीजी को सीधा लिटाकर-
संतरी ने ठूँस दिया खिड़की में।
अंदर तो पहुँच गए, बैठने को भटक रहे हैं।
संतरीजी पायदान पर लटक रहे हैं।

झंडी हिली, गाड़ी चली,
मंत्रीजी चिल्लाए अंदर से-
‘अरे किधर है मलखान?’
‘मौत के मुँह में हूँ श्रीमान’
‘हमारा भी दम घुटा जा रहा है यार’
‘बाथरूम में घुस जाइए सरकार’
‘वह तो पहले से ही रिजर्व है
दो बाहर अड़े हैं, तीन भीतर खड़े हैं।’

यकायक गाड़ी रुकी, धक्का आया
मंत्री जी का सिर
एक महिला से टकराया।
बोली फुफकारकर-
फूट गई हैं क्या? अभी मजा चखा दूँगी,
मारते-मारते ‘चरणसिंह’ बना दूँगी।

मंत्रीजी कुछ कहने ही वाले थे-
अपर बर्थ से बोले एक खद्दरधारी,
‘नारी से लड़ोगे? ऐसी ठोकर मारेगी,
विरोधियों में जा पड़ोगे।’

‘यह क्या हो रहा है?
टेन पीछे को वापिस चल रही है,
उलटी गंगा, क्यों बह रही है?’
‘चुप रहो,
गार्ड साब की प्रेमिका
प्लेटफार्म पर रह गई है।’
उसको रिसीव करके
गाड़ी पुनः आ रही है।
हर तीसरे मील पर
जंजीर खींची जा रही है।
बेटिकट यात्री-
अपने-अपने घरों का रास्ता नाप रहे हैं,
गार्ड और टी.टी. टुकुर-टुकुर टाप रहे हैं।
कौन करे, इन लोगों से संग्राम,
बूढ़ा मरे या जवान
हमें तनुखा से काम।

डिब्बों में अंधकार छा रहा है,

‘ब्लैक आउट’ का मजा आ रहा है।
गाड़ी पुल पर धड़ाधड़ चल रही है,
‘गंगामाई की जय’ बुला रही है।
‘धड़ाम धड़ाम धम्म’...
पुल टूट गया,
इंजन से डिब्बों का संबंध छूट गया।

डूबते हुए मंत्रीजी ने
संतरी का पाजामा पकड़ लिया है
संतरी झटका मारकर छुड़ा रहा है।
‘दूर रहिए दूर, मुझे बख्शिए हुजूर,
बहुत सेवा कर चुका तुम्हारी
परलोक की जिम्मेदारी नहीं है हमारी।’

सबेरा हुआ-
मंत्रीजी आँख मीड़ते हुए उठे-
सबसे पहले संतरी को बुलाया,
हुकुम सुनाया-
‘यात्रा-प्रोग्राम कैंसिल!
आज से सर्विस खत्म हुई तेरी,
स्वप्न में भी दगा दे गया
तो जाग्रत् में क्या रक्षा करेगा मेरी?’

❑

कलियुगी वंदना

हे प्रभो आनंदमय! मुझको यही उपहार दो,
सिर्फ मैं जीवित रहूँ, तुम और सबको मार दो।

भक्त हूँ मैं आपका, अर्जी प्रभो! ले लीजिए,
और जितनी अर्जियाँ हैं, फाड़कर दे दीजिए।
श्रीमतीजी आपका चरणामृत लेती रहें,
चाय औ' सिगरेट पीने को मुझे देती रहें।

पुष्प, चंदन और तुलसी, आप सब ले लीजिए,
सौ-सौ रुपे के नोट जितने हों, मुझे दे दीजिए।
और कोई माँगने आए, उसे फटकार दो,
हे प्रभो आनंदमय! मुझको यही उपहार दो।

आपके भंडार में धन-द्रव्य की सीमा नहीं,
किंतु 'काका' के लिए भेजा कभी बीमा नहीं।
देखना इच्छा हमारी कर न देना कैंसिल,
आप पार्कर पैन हैं, मैं दो टके की पेंसिल।

और मेरा कौन है, सब कुछ हमारे आप हैं,
आप मेरे बाप के भी बाप के भी बाप हैं।
आपका चाकर रहूँगा, आपका ही दास हूँ,
और लोगों के लिए श्रीमान! सत्यानास हूँ।

मुझको अगले जन्म में, बेटा बनाना लाट का,
या प्रभो! खटमल बनूँ मैं सेठजी की खाट का।
दो मुझे आशीष, पूरे सौ बरस जीता रहूँ,
भक्त बनकर रक्त जनता का सदा पीता रहूँ।
धर्म की मैं क्या करूँगा, पाप की पतवार दो,
हे प्रभो आनंदमय! मुझको यही उपहार दो।

ब्लैक रिश्वत की कृपा से जेब को भरता रहूँ,
नोट देकर वोट लेकर चोट भी करता रहूँ।
बक्स मेरा जिस समय भर जाए, उसको छोड़ दो,
और जितने बक्स हैं, तुम सील सबकी तोड़ दो।

एक झंडा, चार गुंडा, आठ मोटर-कार दो,
हे प्रभो आनंदमय! मुझको यही उपहार दो।

भक्तवर प्रह्लाद को विश्वास था उस खंब का,

किंतु मैं तो भक्त हूँ भगवान, एटम-बंब का।
न्याय या अन्याय की परवा कभी करता नहीं,
पंच या सरपंच से बंदा कभी डरता नहीं।

तुम सुदर्शन-चक्र पर अणुशक्ति की पॉलिश करो,
और मेरी खोपड़ी पर स्वार्थ की मालिश करो।
मित्र सब ऐसे मिलें, जो बुद्धिमानी छोड़ दें,
आँख जो मुझसे मिलाए, वे उसी की फोड़ दें।

राष्ट्रों का संघ जो-कुछ मैं कहूँ, करता रहे,
मुझको हौआ जानकर, संसार बस डरता रहे।
मृत्यु को भी मार डालूँ, यह विशेष अधिकार दो,
हे प्रभो आनंदमय! मुझको यही उपहार दो।

❑

जय बोलो बेईमान की

मन मैला, तन ऊजरा, भाषण लच्छेदार,
ऊपर सत्याचार है, भीतर भष्टाचार।
झूठों के घर पंडित बाँचें, कथा सत्य भगवान की।
जय बोलो बेईमान की!

प्रजातंत्र के पेड़ पर, कौआ करें किलोल,
टेप-रिकॉर्डर में भरे, चमगादड़ के बोल।
नित्य नई योजना बन रहीं, जन-जन के कल्याण की।
जय बोलो बेईमान की!

महँगाई ने कर दिए, राशन-कारड फेल,
पंख लगाकर उड़ गए, चीनी-मिट्टी तेल।
'क्यू' में धक्का मार किवाड़ें बंद हुई दुकान की।
जय बोलो बेईमान की!

डाक-तार संचार का 'प्रगति' कर रहा काम,
कछुआ की गति चल रहे, लैटर-टेलीग्राम।
धीरे काम करो, तब होगी उन्नति हिंदुस्तान की।
जय बोलो बेईमान की!

दिन-दिन बढ़ता जा रहा काले धन का जोर,
डार-डार सरकार है, पात-पात करचोर।
नहीं सफल होने दें कोई युक्ति चचा ईमान की।
जय बोलो बेईमान की!

चैक कैश कर बैंक से, लाया ठेकेदार,
आज बनाया पुल नया, कल पड़ गई दरार।
बाँकी झाँकी कर लो काकी, फाइव ईयर प्लान की।
जय बोलो बेईमान की!

वेतन लेने को खड़े प्रोपेक्तसर जगदीश,
छह सौ पर दस्तख़त किए, मिले चार सौ बीस।
मन-ही-मन कर रहे कल्पना शेष रवक्तम के दान की।
जय बोलो बेईमान की!

खड़े टेन में चल रहे, कक्का धक्का खाएँ,
दस रुपए की भेंट में, थी टायर मिल जाएँ।
हर स्टेशन पर हो पूजा श्री टी.टी. भगवान की।
जय बोलो बेईमान की!

बेकारी औ' भुखमरी, महँगाई घनघोर,
घिसे-पिटे ये शब्द हैं, बंद कीजिए शोर।
अभी जरूरत है जनता के त्याग और बलिदान की,
जय बोलो बेईमान की!

मिल-मालिक से मिल गए नेता नमकहलाल,
मंत्र पढ़ दिया कान में, खत्म हुई हड़ताल।
पत्र-पुष्प से पॉकिट भर दी, श्रमिकों के शैतान की।
जय बोलो बेईमान की!

न्याय और अन्याय का, नोट करो डिफरेंस,
जिसकी लाठी बलवती, हाँक ले गया भैंस।
निर्बल धक्के खाएँ, तूती बोल रही बलवान की।
जय बोलो बेईमान की!

पर-उपकारी भावना, पेशकार से सीख,
दस रुपए के नोट में बदल गई तारीख।
खाल खिंच रही न्यायालय में, सत्य-धर्म-ईमान की।
जय बोलो बेईमान की!

नेताजी की कार से, कुचल गया मजदूर,
बीच सड़क पर मर गया, हुई गरीबी दूर।
गाड़ी को ले गए भगाकर, जय हो कृपानिधान की।
जय बोलो बेईमान की!

❑

मूर्खिस्तान जिंदाबाद

स्वतंत्र भारत के बेटे और बेटियो!
माताओ और पिताओ,
आओ, कुछ चमत्कार दिखाओ।
नहीं दिखा सकते?
तो हमारी हाँ में हाँ ही मिलाओ।

हिंदुस्तान, पाकिस्तान, अफगानिस्तान
मिटा देंगे सबका नामो-निशान
बना रहे हैं-नया राष्ट्र 'मूर्खिस्तान'
आज के बुद्धिवादी राष्ट्रीय मगरमच्छों से
पीड़ित है प्रजातंत्र, भयभीत है गणतंत्र
इनसे सत्ता छीनने के लिए
कामयाब होंगे मूर्खमंत्र-मूर्खयंत्र
कायम करेंगे मूर्खतंत्र।

हमारे मूर्खिस्तान के राष्ट्रपति होंगे-
तानाशाह ढपोरशंख
उनके मंत्री (यानी चमचे) होंगे-
खट्टासिंह, लट्ठासिंह, खाऊलाल, झपट्टासिंह
रक्षामंत्री-मेजर जनरल मच्छरसिंह

राष्ट्रभाषा हिंदी ही रहेगी,
लेकिन बोलेंगे अँगरेजी।
अक्षरों की टाँगें ऊपर होंगी, सिर होगा नीचे,
तमाम भाषाएँ दौड़ेंगी, हमारे पीछे-पीछे।
सिख-संप्रदाय में प्रसिद्ध हैं पाँच 'ककार'-
कड़ा, कृपाण, केश, कंघा, कच्छा।
हमारे होंगे पाँच 'चकार'-
चाकू, चप्पल, चाबुक, चिमटा और चिलम।

इनको देखते ही भाग जाएँगी सब व्याधियाँ
मूर्खतंत्र-दिवस पर दिल खोलकर लुटाएँगे उपाधियाँ :
मूर्खरत्न, मूर्खभूषण, मूर्खश्री और मूर्खानंद।

प्रत्येक राष्ट्र का झंडा है एक, हमारे होंगे दो,
कीजिए नोट-लँगोट ऐंड पेटीकोट
जो सैनिक हथियार डालकर
जीवित आ जाएगा,

उसे ‘परममूर्ख-चक्र’ प्रदान किया जाएगा।
सर्वाधिक बच्चे पैदा करेगा जो जवान
उसे उपाधि दी जाएगी ‘संतान-श्वान’
और सुनिए श्रीमान-
मूर्खिस्तान का राष्ट्रीय पशु होगा गधा,
राष्ट्रीय पक्षी उल्लू या कौआ,
राष्ट्रीय खेल कबड्डी और कनकौआ।
राष्ट्रीय गान मूर्ख-चालीसा,
राजधानी के लिए शिकारपुर, वंडरफुल!
राष्ट्रीय दिवस होली की आग लगी पड़वा।

प्रशासन में बेईमानी को प्रोत्साहन दिया जाएगा,
ईमानदार सुस्त होते हैं, बेईमान चुस्त होते हैं।
वेतन किसी को नहीं मिलेगा,
रिश्वत लीजिए,
सेवा कीजिए!

‘कीलर कांड’ ने रौशन किया था
इंग्लैंड का नाम,
करने को ऐसे ही शुभ काम-
खूबसूरत अफसर और अफसराओं को छाँटा जाएगा,
अश्लील साहित्य मुफ्त बाँटा जाएगा।

पढ़-लिखकर लड़के सीखते हैं छल-छंद
डालते हैं डाका,
इसलिए तमाम स्कूल-कॉलेज
बंद कर दिए जाएँगे ‘काका’।
उन बिल्डिंगों में दी जाएगी ‘हिप्पीवाद’ की तालीम
उत्पादन कर से मुक्त होंगे,
भंग-चरस-शराब-गाँजा-अफीम।
जिस कवि की कविताएँ कोई नहीं समझ सकेगा,
उसे पाँच लाख का ‘अज्ञानपीठ-पुरस्कार’ मिलेगा।
न कोई किसी का दुश्मन होगा न मित्र,
नोटों पर चमकेगा उल्लू का चित्र!

नष्ट कर देंगे-
धड़ेबंदी, गुटबंदी, ईर्ष्यावाद, निंदावाद,
मूर्खिस्तान जिंदाबाद!

❑

प्रसिद्धि-प्रंग

: 1 :
काशीपुर क्लब में मिले, कवि-कोविद अमचूर,
चर्चा चली कि कहाँ की कौन चीज मशहूर?
कौन चीज मशहूर, प्रश्न यह अच्छा छेड़ा,
नोट कीजिए, हैं प्रसिद्ध मथुरा के पेड़ा।
आत्मा-परमात्मा प्रसन्न हो जाएँ 'काका',
लड्डू संडीला के हों, खुरचन खुरजा का।

: 2 :
अपना-अपना टेस्ट है, अपना-अपना ढंग,
रंग दिखाती अंग पर, हरिद्वार की भंग।
हरिद्वार की भंग, डिजाइन नए-निराले,
जाते देश-विदेश अलीगढ़ वाले ताले।
मालपुआ स्वादिष्ट बरेली वाले गुड़ के,
दालमोठ आगरा और पापड़ हापुड़ के।

: 3 :
कवि-सम्मेलन में गए, कलकत्ता चतुरेश,
ढाई किलो चढ़ा गए, रसगुल्ला-संदेश।
रसगुल्ला-संदेश, तोंद पर फेरा हत्था,
ली डकार तो काँप गया सारा कलकत्ता।
केसर कश्मीरी, अमरूद इलाहाबादी,
साड़ी बनारसी व लिहाफ फर्रुखाबादी।

: 4 :
केला बंबइया मधुर, सेब सुघर रतलाम,
खरबूजे लखनऊ के और सपेत्तदा आम।
और सपेत्तदा आम, पियो रस भर-भर प्याले,
मँगवाकर संतरे प्रसिद्ध नागपुर वाले।
कह 'काका' कवि, रोक सके किसका बलबूता?
अमरीका तक चला कानपुर वाला जूता।

: 5 :
चंदन-संदल के लिए याद रखो मैसूर,
शहर मुरादाबाद के बरतन हैं मशहूर।
बरतन हैं मशहूर, लगे कटनी का चूना,
जयपुर की चुनरी सौंदर्य बढ़ाए दूना।

पढ़ी-अनपढ़ी क्वारी-ब्याही-युवती-बूढ़ी,
देख-देख ललचाएँ फिरोजाबादी चूड़ी।

: 6 :
भुजिया बीकानेर की, देती स्वाद विचित्र,
काकी को कन्नौज का, 'काका' लाए इत्र।
'काका' लाए इत्र, देहरादूनी चावल,
टेलर साहब मेरठ की कैंची के कायल।
छुरा रामपुर और हाथरस वाले चाकू,
धन्य हमारा देश, जहाँ के वीर लड़ाकू।

❑

लाउडस्पीकर वंदना

‘लाउडस्पीकर’ प्रभो! कोलाहल के बाप,
भोंपू या कनफोड़वा, नाद-ब्रह्म हैं आप।
नाद-ब्रह्म हैं आप, गरज घनघोर दहाड़ें,
बहरे सुनने लगें, दाँत गूँगा जी फाड़ें।
असेंबली में बैठे माननीय स्पीकर,
उनसे भी उच्चासन पर लाउडस्पीकर।

रामायण का पाठ हो, भजन-कीर्तन-जाप,
धार्मिक कार्यों के लिए अति आवश्यक आप।
अति आवश्यक आप, नहीं चिंघाड़ो ऐसे,
तो भक्तों की टेर प्रभू तक पहुँचे कैसे?
अभिनंदन-वंदन हो, मृतक-भोज या शादी,
तुमको चाहें ईश्वर और अनीश्वरवादी।

लाला लूटनलाल जी, सल्लो सट्टेबाज,
बने आपकी कृपा से भक्तों के सरताज।
भक्तों के सरताज, पान वाले हलवाई,धोबी, तेली,
हरिजन, ब्राह्मण, बनिया, नाई।
जातिवाद को त्याग आप सबके घर जाते,
स्वर्गलोक में उनकी सीट रिजर्व कराते।

एकतंत्र, सामंत या प्रजातंत्र-गणतंत्र,
आवश्यक है सभी को ध्वनि-विस्तारक यंत्र।
ध्वनि-विस्तारक यंत्र, युद्ध से कभी न डरते,
हो निशंक-निर्भीक देश की सेवा करते।
मिला आपका साथ, भाग्य बँगला का जागा,
मारी एक दहाड़, ‘सातवाँ बेड़ा’ भागा।

रात-रात भर जिस जगह मचे आपका शोर,
नहीं पहुँच सकते वहाँ, ठग,
डाकू या चोर।ठग, डाकू या चोर,
परीक्षा के दिन आते,पाठ छोड़कर छात्र-छात्रा गाने गाते।

नवक्तल करें या इम्तहान में लाएँ जीरो,
भाग जाएँ बंबई, स्वयं को समझें हीरो।

अस्पताल के निकट हो प्रवचन धुआँधार,
गाली देते आपको, अल्पबुद्धि बीमार।
अल्पबुद्धि बीमार, नर्स-डॉक्टर घबराते,
किंतु आपकी दयादृष्टि को समझ न पाते।
अंत समय प्रभुनाम कान में पड़ जाएगा,
मरने वाला स्वर्ग-सीढ़ियाँ चढ़ जाएगा।

जिस पार्टी से आपका, नहीं मिल सके मेल,
उसका सम्मेलन तुरत कर देते हो पेक्तल।
कर देते हो पेक्तल, भीड़ में मचे तहलका,
काव्य-मंच पर कब्जा होय विरोधी दल का।
'पत्र-पुष्प' पर संयोजक जी डालें डाका,
जान बचाकर स्टेशन को भागें काका।

जाएँ चुनाव-प्रचार में प्रत्याशी के साथ,
तारें अथवा डुबो दें, लाज आपके हाथ।
लाज आपके हाथ, एम.पी. उसे बना दें,
यदि हो जाएँ रुष्ट, जमानत जब्त करा दें।
'डबल डोज' लेकर आए मिस्टर खलनायक,
उखड़ गए तो बोले, 'ठीक नहीं था माइक।'

पंडित हो या पादरी, सिक्ख होएँ या शेख,
गुटबंदी से दूर हैं, आप धर्मनिरपेक्ष।
आप धर्मनिरपेक्ष, निभाते भाईचारा,
मंदिर-मसजिद, चर्च होय अथवा गुरुद्वारा।
कहँ काका, कोयल कूके या रेंके भैंसा,
करो प्रसारित शब्द-शब्द जैसे का तैसा।

मधुर मुरलिया बजे या, कूकुर करें प्रलाप,
भेदभाव किंचित् नहीं, समद्रष्टा हैं आप।
समद्रष्टा हैं आप, राम हों अथवा रावण,
इंदिरा की वाणी या जगजीवन का भाषण।
बिना सेंसर करते हो सीधी सप्लाई,
प्रेस-रिपोर्टर, संपादक सब करें बड़ाई।

गर्जन-तर्जन-शोरगुल-चीख-पुकार समर्थ,

ट्रंजिस्टर या रेडियो, बिन स्पीकर व्यर्थ।
बिन स्पीकर व्यर्थ, बने हो सबके रीजन,
एंप्लीफायर, टेपरिकॉर्डर, टेलीविजन।
थियेटर, ड्रामा, सर्कस और सिनेमा सारे,
बिना आपके पड़े रहें सब ठप्प बिचारे।

शुभ स्वतंत्रता-पर्व पर, स्वीकारें सब लोग,
आजादी में आपका मिला सक्रिय सहयोग।
मिला सक्रिय सहयोग, आप यदि नहीं डाँटते,
तो भारत को छोड़ भला अँगरेज भागते!
करते पर-उपकार, नहीं भाती खुदगरजी,
बारंबार प्रणाम आपको स्पीकरजी।

❑

काका-काकी संवाद

काव्य-कला की कोठरी, छंदन जड़े किबार,
तारे लागे 'श्लेष' के, भरे 'यमक' भंडार।
भरे यमक भंडार, छमाछम आइऔ काकी,
उछल पड़े खैयाम, सामने देखी सावक्ताद्ध।
'देवीजी! कोई मौलिक कल्पना सुझाओ,
फड़क उठें श्रोता, ऐसे कुछ 'भाव' बताओ।

'भाव' बहुत ऊँचे कहूँ, नोट करो भरतार,
साठ रुपैया की किलो, मिले उर्द की दार।
मिले उर्द की दार, पड़े अब कैसे पूरा?
तीस रुपैया पाव बिक रहा चीनी-बूरा।
कहो, कौन से कवि जी ऐसे भाव लिख रहे?
मटर-टमाटर, कलाकंद के भाव बिक रहे।

और बताऊँ भाव कुछ, और बताऊँ दाम?
एक रुपए में मिलेगा, सिर्पक्त एक बादाम।
सिर्पक्त एक बादाम, अधिक बल-तावक्तत चाहो,
तो असली घी के, इंजेक्शन लगवा आओ।
जिस 'बनास्पति' की करते थे, सभी बुराई,
आज उसी के लिए तरसते लोग-लुगाई।

क्या ले बैठीं झींकना, किया रंग में भंग,
चलो सिनेमा देखने, आज हमारे संग।
आज हमारे संग, पड़ेंगी तुम्हें दिखाई,
'बालकनी' की टिकिट ले रहीं मिस महँगाई।
हाय गरीबी, हाय गरीबी, जो चिल्लावें,
वे ही 'क्यू' में लगे टिकिट को धक्के खावें।

खेल खत्म जब हो गया, वे थीं क्लांत-अशांत,
'समझे हम तुम हो दुखी, देखी फिल्म दुखांत।
'देखी फिल्म दुखांत, 'तुम्हें सूझा है ठट्टा,
खींच ले गया कोई, हमारा नया दुपट्टा।'
यह सुनकर हँस पड़ी, नए लड़कों की टोली,
उन्हें देखकर करुण स्वरों में काकी बोली-
'इन्हीं लड़कों ने ले लीना दुपट्टा मेरा।'

❑

ला-‘कर’

काले धन की खोज का, चला विकट अभियान,
कलाकार चिल्ला रहे, रक्षा कर भगवान।
रक्षा कर भगवान, लगा यह धक्का गहरा,
घर-बँगलों पर बैठा दिया पुलिस का पहरा।
हमने किए इकट्ठे नोट, नाच-गा-गा कर,
करके ‘लाकर’ सील, कह रहे ला-कर, ला-कर।

❑

हिप्पीवाद

‘काका’ हिप्पीवाद से क्यों घबराते आप?
‘हरे कृष्ण’ की आड़ में छिपें हजारों पाप।
छिपें हजारों पाप, साथ में हिप्पिन चेली,
अलकोहल की गंध, वासना की रँगरेली।
इस बिलायती नुस्खे से मिट जाता है गम,
रहो लगाते दम्म, कि जब तक है दम में दम।

❑

तदबीर-तकदीर

ज्ञानचंद्र के ज्ञान से टकराए बलवीर,
क्या कारण, तदबीर पर हावी है तकदीर?
हावी है तकदीर, रात-दिन श्रम करते हैं,
फिर भी बेचारों के पेट नहीं भरते हैं।
सेठ 'अँगूठा छाप' मौज बँगले में करते,
पाँच एम.ए., दस बी.ए. खिदमत में रहते।

ज्ञानी बोले, खोपड़ी चाट रहे क्यों व्यर्थ,
भाग्यशात्र में देख लो इस मसले का अर्थ।
इस मसले का अर्थ, परिश्रम में धन होता,
तो प्रत्येक कुली-मजदूर लखपती होता।
अगर बुद्धि के द्वारा धन अर्जित कर पाते,
सब लेखक-कवि-संपादक कुबेर बन जाते।

❑

चंदे के फंदे

लीजे अपने साथ में कुछ ऊँचे व्यक्तित्व,
इस पर ध्यान न दीजिए कैसे हैं कृतित्व।
कैसे हैं कृतित्व, पर्सनल्टी का फंदा,
राजी या नाराजी से दिलवाता चंदा।
हो कोई परमिट-लैसंस दिलाने वाला,
जितना चाहो उतना चंदा दे दें लाला।

धंदा मंदा हो गया, रहा न पैसा पास,
चंदा करना सीखिए, क्यों हो रहे उदास?
क्यों हो रहे उदास, बड़ा अनुभव है हमको,
चंदे के हथकंडे चंद बताएँ तुमको।
विद्यालय या नाम किसी गौशाला का लो,
अथवा 'विधवा आश्रम' की रसीद छपवा लो।

चंदे के बहुरूप हैं, कैसे करें बखान?
धौंस-धपाड़-लताड़ या वारफंड,अनुदान।
वारफंड, अनुदान, बिना माँगे ही जिसको,
चंदा होता प्राप्त, 'भेंट' कहते हैं उसको।
हाकिम-हुक्कामों द्वारा वसूल करवाना,
उस चंदे को दंड समझिए या जुरमाना।

चंदा लेने आ गया, घुटमुंडों का झुंड,
स्वामीजी हैं साथ में, शोभित तिलक-त्रिपुंड।
शोभित तिलक-त्रिपुंड, देखिए हिम्मत उनकी,
बोले नहीं, रसीद काट दी एक हजार की।
धर्मध्वजियों ने डाला पॉकिट पर डाका,
कर देते यदि मना, नर्क में जाते 'काका'।

मंत्रीजी के मान का बना रहे हैं प्लान,
अभिनंदन-वंदन करो, हो जाए कल्यान।
हो जाए कल्यान, अर्थ-सहयोग दीजिए,
इसके बदले इन्विटेशन स्वीकार कीजिए।
हाथ मिलाओ उनके साथ खिंचाओ फोटो,
ड्रिंक, डिनर लेकर फिर आइसक्रीम सपोटे।

हों चुनाव गणतंत्र में, चमचे पूँक्तकें मंत्र,
उच्च स्तर पर चल रहा चंदे का षत्रं।
चंदे का षत्रं, पकड़ आसामी मोटा,

अगर चीं-चपड़ करे, कैंसिल कर दो कोटा।
'काका' मुँहमाँगा पार्टी को दे दो चंदा,
फिर छुट्टी है तुम्हें, चलाओ गोरखधंदा।

अगर भाग्य से बन गई, 'उनकी' ही सरकार,
समझ लीजिए, बन गई सोने की दीवार।
सोने की दीवार, इशारा करें कृपालू,
बंद फैक्टरी, दो दिन में हो जाए चालू।
कहँ काका कवि, जगर-मगर हों बँगले ऑफिस,
जितना चंदा दिया, दस गुना ले लो वापिस।

❑

मुफ्तखोर

माल मुफ्त दिल बेरहम, कैसे जान बचाएँ?
जिधर देखिए उधर ही, मुफ्तखोर मिल जाएँ।
मुफ्तखोर मिल जाएँ, न्याय-दर्शन है कैसा?
इन पर लागू हो, कोई वक्तानून न ऐसा।
यदि थोड़ी सी भी उदारता आप दिखाएँ,
चीज भाड़ में गई, आपको भी ले जाएँ।

टैस्ट मैच जब चल रहा, आए प्रातःकाल,
ट्रंजिस्टर को ले गए, बाबू किरकिट लाल।
बाबू किरकिट लाल, माँगने पहुँचे जब हम,
कहने लगे कि यार बड़े बेसब्री हो तुम!
चीज जरा-सी, इतना शोर मचा रक्खा है,
कविता लिखिए आप, मैच में क्या रक्खा है।

काव्य-गोष्ठी जम रही, टपक रही थीं बूँद,
छाता लेकर चल दिए, प्रोफेसर अमरूद।
प्रोफेसर अमरूद, तकाजा भेजा घर पर,
'आप रात लाए थे वह छाता दे दो सर।'
जीभ हिलाई 'सर' ने लेकर एक उबासी,
अभी ले गया है उसका कल्लू चपरासी।

कल्लू खाँ कहने लगे, सुनिए बरखुरदार!
छाता हमसे ले गया, चुन्ना चौकीदार।
चुन्ना चौकीदार, हमारा सीना धड़का,
पता लगा-स्कूल ले गया उसका लड़का।
तान मोड़कर, मूँठ तोड़कर वापिस लाया,
फिर भी हमने छाता, छाती से चिपकाया।

सुबह डाकखाने गए, देने टेलीग्राम,
रोनी सूरत में मिले, मिस्टर मुफ्तीराम।
मिस्टर मुफ्तीराम, मर गई हैं माता जी,
तार लिखूँगा, जरा पैन देना काका जी!
शब्दों की शुमार में था जब ध्यान हमारा,
पैन जेब में खोंस, कर गए आप किनारा।

ले रक्खा है आपने घर पर टेलीफोन,
मुफ्तखोर बातें करें, साधे रहिए मौन।
साधे रहिए मौन, पड़ोसीधर्म निभाएँ,

आधी रात जगाकर, टंककॉल कर जाएँ।
पैसे माँगो तो 'काका' कंजूस कहाओ,
गाँठ कटाओ, अथवा टेलीफोन कटाओ।

काका बैठे टेन में, लेकर हिंदुस्तान,
उठा ले गए बर्थ से, उसे एक श्रीमान।
उसे एक श्रीमान, मुफ्तखोरी में माहिर,
उनसे झपट ले गया कोई और मुसाफिर।
इससे उस पर, उससे उस पर, उससे उस पर,
गायब था अखबार, न जाने पहुँचा किस पर?

'फोकट' जी कहने लगे, चार पुस्तकें दाब,
हास्य-व्यंग्य में आपका 'काका' नहीं जवाब!
काका नहीं जवाब, इन्हें घर पर देखूँगा,
हल्ला मच जाए, वह आलोचना लिखूँगा।
आशावादी बने हुए हम टाप रहे हैं,
पत्र-पत्रिकाओं के पन्ने चाट रहे हैं।

तीन महीने बाद हम, पहुँचे उनके पास,
आलोचक जी व्यस्त थे, खेल रहे फल्लाश।
खेल रहे फल्लाश, देखकर बोले हमको,
गजब हो गया काका! क्या बतलाएँ तुमको।
लगे हुए थे हम कविता की 'तुकबंदी में-
वाइफ ने पुस्तकें बेच डालीं रद्दी में'।

ज्ञानी गुनिजन कह गए, निज जीवन का सार,
पत्नी-पुस्तक-लेखनी, कभी न देउ उधार।
कभी न देउ उधार, नहीं वापिस आ पाएँ,
यदि आएँ भी तो खराब होकर के आएँ।
रक्षा संभव है, डाकू-बरजोर-चोर से,
लेकिन बहुत कठिन है, बचना मुफ्तखोर से।

अब न किसी को देय कुछ, पक्का किया विचार,
साले का 'मनमाड' से मिला जवाबी तार।
मिला जवाबी तार, भेजिए जल्दी सिस्टर,
हमने उत्तर दिया, नहीं भेजेंगे मिस्टर।
'काकी' को दे दें उधार तो कैसे जीएँ,
जले दूध के, पूँक्तक-पूँक्तककर मट्ठा पीएँ।

❑

कंजूस-कथा

: 1 :
ख्यातिप्राप्त कंजूस थे श्री पिस्सूमल सेठ,
पंडा आए गया से, हुई सेठ से भेंट।
हुई सेठ से भेंट, बही में नाम दिखाए,
पिंडदान करने के फलादेश समझाए।
लाला बोले-'हमें नहीं माफिक आता है,
दान-धर्म से दर्द पेट में हो जाता है।'

: 2 :
धर्म-कर्म में देवियाँ रखतीं हैं विश्वास,
इसीलिए पंडा गए सेठानी के पास।
सेठानी के पास, 'देवि! पति को समझाओ,
पितरों का ऋण चढ़ा हुआ है, उऋण कराओ!'
आश्वासन, पालागन द्वारा पेट भर दिया,
चाय पिलाकर पंडाजी को विदा कर दिया।

: 3 :
लाला आते रात्रि को करके बंद दुकान,
'पिंडदान कब करोगे?' लाली खाती कान।
लाली खाती कान, सहन कब तक कर पाते,
रस्सी के घिस्सों से लोहे भी कट जाते।
कहँ 'काका', झुक गए अंत में तिरिया हठ पर,
रेल किराया दाब, चल दिए यात्रा-पथ पर।

: 4 :
पंडा जी करवाएँगे खर्च अनाप-शनाप,
पिंडदान चुपचाप हम कर लें अपने-आप।
कर लें अपने-आप दक्षिणा-खर्च बचेगा,
वेष बदलकर जाएँ, न कोई पहचानेगा।
बैठ मुसाफिरखाने में यह काम कर लिया,
चने और सत्तू खा करके पेट भर लिया।

: 5 :
स्टेशन से शहर में करने लगे प्रवेश,
चेहरे पर थी दीनता, फटेहाल था वेष।
फटेहाल था वेष, जा रहे लपके-लपके,
डंडा लिये सामने पंडाजी आ टपके।

‘वाह सेठ! यह रूप बनाया कैसा तुमने?
मुश्किल से जिजमान तुम्हें पहचाना हमने।’

: 6 :
‘बोल रहे हैं मंत्र हम, आप करो अस्नान,
पिंड तभी स्वीकार हों, करो स्वर्ण का दान।’
‘करो स्वर्ण का दान, गुरु मत देखो सपने,
सोना क्या, लोहा भी पास नहीं है अपने।’
पंडाजी ने कहा-‘सेठ, क्यों घबराते तुम,
कर दीजे संकल्प, बाद में ले लेंगे हम।’

: 7 :
पिस्सूमल कहने लगे, ‘छोड़ो सभी विकल्प,
सवा रुपे के स्वर्ण का छुड़वा दो संकल्प।’
छुड़वा दो संकल्प, गुरु ने आँख तरेरी,
‘तीर्थ-घाट पर क्यों हेटी करते हो मेरी!’
पंडा का रुख देख, बढ़ा कुछ और हौसला,
बढ़ते-बढ़ते पाँच रुपे में हुआ फैसला।

: 8 :
लाला घर को चल दिए, किया तीर्थ को पार,
पंडाजी के हो गए रुपए पाँच उधार।
रुपए पाँच उधार, महीना तीन बिताए,
अपना धन वसूल करने को पंडा आए।
लाला बोले लड़के से-‘सुन, बेटा घिस्सू!
कह दीजो, बीमार पड़े हैं पापा पिस्सू!’

: 9 :
पंडाजी कहने लगे, ‘छोड़ूँ सारे काज,
मैं अपने जिजमान का खुद ही करूँ इलाज।
खुद ही करूँ इलाज, भाग जाए बीमारी,
जड़ी-बूटियों के अनुभव में उम्र गुजारी।’
घोट-पीस के एक दवा पहुँचाई अंदर,
बोले सेठ-‘हमें जल्दी ले लो धरती पर।’

: 10 :
‘कह दो लाला मर गए, रोओ! छोड़ लिहाज,
लेना-देना भूलकर भाग जाएँ महाराज।
भाग जाएँ महाराज, ‘वचन क्यों बोलो ऐसे?’

पत्नी बोली, ‘जीते-जी मैं रोऊँ कैसे?’
कहें सेठ ललकार, ‘नहीं मानेगी कब तक,
डंडा एक लगे, रोएगी घंटे भर तक।’

: 11 :
झूठ-मूठ रोने लगी, समझ पिया की नीत,
‘हाय-हाय’ को सुन हुए पंडाजी भयभीत।
पंडाजी भयभीत, पड़ा मूजी से पाला,
कहा कान में, ‘मेरे रुपए दे दो लाला!
आज न दोगे, जन्म दुबारा लेना होगा,
दान किया धन नहीं पचेगा, देना होगा!’

: 12 :
पिस्सूमल कहने लगे, ‘भाग जाउ चुपचाप,
करूँ शिकायत पुलिस में, फँस जाओगे आप।
फँस जाओगे आप, आ रही है उबकाई,
जाने क्या तुमने जहरीली दवा पिलाई!’
कहँ पंडा घबराय, ‘दया ब्राह्मण पर कीजे,
वह भी छोड़े, लो ये पाँच और ले लीजे!’

❑

स्वतंत्रता का लाभ उठाओ!

होटल में जाकर यों बोला,
मैनेजर से भोलू भंगी,
लाओ, टेबिल जल्द सजाओ,
राज हमें दे गया फिरंगी।
मंदिर में प्रवेश कर बोला,
पंडितजी परदा सरकाओ,
गृहिणी ने भेजे हैं लड्डू,
जल्दी इनका भोग लगाओ।
टुकुर-टुकुर क्या ताक रहे हो?
मैं भी खाऊँ, तुम भी खाओ।

—स्वतंत्रता का लाभ उठाओ।

थर्डक्लास की टिकिट खरीदो,
फर्स्टक्लास में बैठो चाचा,
कोई तुमसे आँख मिलाए,
मारो उसके एक तमाचा।
आता हो यदि टी.टी.आई.
खर्राटे लेकर सो जाओ,
अथवा शौचालय में घुसकर,
अंदर से चटखनी लगाओ।

—स्वतंत्रता का लाभ उठाओ।

नित्य सिनेमा देखो मिस्टर,यह दुनिया है
आनी-जानी,पूरी बोतल पीकर बैठो,
करो छेड़खानी मनमानी।
सिर पर चप्पल पड़ जाएँ तो,
टोपी झाड़ो, घर आ जाओ,

—स्वतंत्रता का लाभ उठाओ।

मंत्रीजी का देखो बँगला,
गमला में बोई है मक्का,
अपने घर का आँगन सूना,
काकी को समझाते कक्का।
आओ रानी! हम-तुम मिलकर,
खुरपा से अपना घर खोदें,
भारत की प्रसिद्ध तरकारी,
इसमें 'फूट' कचरिया बो दें।
सब्जी खाने को मन चाहे,
केवल उसका छिलका खाओ,

भीतर जो गूदा निकले वह,
फूड-मिनिस्टर को दे आओ।

—स्वतंत्रता का लाभ उठाओ।

आजादी की साँसें खींचो,
पानी पी-पीकर दिन काटो,
मूँगफली की खली मिलाकर,
शकरकंद का आटा चाटो।
एक पोस्टर मैं चिपकाऊँ,
एक पोस्टर तुम लटकाओ,
गली-गली मारें किलकारी,
'अन्न बचाओ, अन्न बचाओ।'

—स्वतंत्रता का लाभ उठाओ।

जाने क्या होना है, देवी!
खद्दर महँगी, रेशम महँगा,
थान घासिया का लाकर मैं,
बनवाऊँगा तुमको लहँगा।
उसी टाट का मेरा कुरता,
उसी टाट का बने लँगोटा,
खद्दर का आसन हिल जाए,
करूँ खोपड़ी घोटम-घोटा।
टाट पहनकर जब मैं आऊँ,
स्वामी टाटानंद कहाऊँ,
टाटा-बिरला भय से काँपें,
पूँजीवाद समाप्त कराऊँ।
टाट-मंच पर जब मैं बोलूँ,
नेता-श्रोता खाएँ चक्कर,
गांधीवाद-समाजवाद से,
टाटवाद की होगी टक्कर।
घर में कोई आ जाए तो,
टाट उढ़ाओ, टाट बिछाओ।

—स्वतंत्रता का लाभ उठाओ।
❑

‘काका’ के पद

(इन पदों को गाकर बिना टिकट बैवुंक्ठ-धाम की यात्रा कीजिए।)

: 1 :
प्रभु, मैं सब नेतन कौ नाई!
हाथ फेरि देखौ मनमोहन, कैसी शेव बनाई। प्रभु मैं...

गंगा-जल सौं धोय उस्तरा, धार तेज करवाई।
कैंची-कंघा कछू न जानूँ, घोटम-घोट मचाई। प्रभु मैं...

छह महीना तक गांधीजी ने, मोही सौं बनवाई।
यहि कारन बूढ़े बाबा के चमक अनोखी आई। प्रभु मैं...

एक बार नेहरू चाचा ने, लीनों मोहि बुलाई।
तब सौं उनके मुख-मंडल पर मूँछ न एकहु आई। प्रभु मैं...
जा दिन चरणसिंह ने ‘काका’, पग-चप्पी करवाई।
लालकिले पर चढ़ वाही दिन, झंडा दियौ लगाई। प्रभु मैं...

: 2 :
नाथ जू, अबके मोहि उबारौ!
साठ बरस की भई उमरिया, भयौ न ब्याह हमारौ,
चिंता लागी रहै रैन-दिन, मर जाऊँगौ क्वारौ।

नाथ जू, अबके मोहि उबारौ।

खाय तेरहीं हँसें पड़ौसी, कोउ न रोवनहारौ,
गोंद लगाकर जोड़ देउ प्रभु, फूटौ भाग हमारौ।

नाथ जू, अबके मोहि उबारौ।

झाँझन की झनकार होत जब, उर बिच बहत पनारौ,
बेगि करौ प्रभु अंतरयामी, ‘काका’ कौ निस्तारौ।

नाथ जू, अबके मोहि उबारौ।

: 3 :
मो सम कौन कुसल व्यापारी?
कूद-कूदकर करूँ कीर्तन, ‘ब्लैक-ब्लैक बनवारी’,
भरि-भरि थैली रिश्वत दीन्ही, कोतवाल सौं यारी।

मो सम कौन कुसल व्यापारी।

बीस-बीस में बेची ‘काका’, तीन-तीन की सारी,
सोने में पीरी-करि दीन्ही, सेठानी घर-वारी।

मो सम कौन कुसल व्यापारी।

मुख में राम, बगल में चाकू, रख मूरख संसारी,
ऐसौ कुल-सपूत जो जन्मैं, धन्य पिता-महतारी।

मो सम कौन कुसल व्यापारी।
❑

नवीन प्रकाश चाहिए

स्वतंत्रता की मधु वेला में,
अपना आपा भूल गए हैं,
गेहूँ-चीनी खाते-खाते,
पेट हमारे फूल गए हैं।
हम तुमको उपदेश दे रहे,
जीवन में परिवर्तन लाओ,

इसीलिए कुछ दिन तक मित्रो!
केवल सूखी घास चबाओ।
तुम चाहे जैसे दिन काटो,
हमको तो उल्लास चाहिए,

—हमें नवीन प्रकाश चाहिए।

हिंदू-कोड हिंद में आया,
अच्छे घर से नाता जोड़ो,
ससुर-संपदा कुर्क कराकर,
फूटी कौड़ी पास न छोड़ो।
मरने को तैयार धरी हो,
ऐसी बूढ़ी सास चाहिए,

—हमें नवीन प्रकाश चाहिए।

अगर विरोधी चिल्लाते हैं,
चिल्लाने दो, क्या होता है?
इस पर भी तो ध्यान दीजिए,
हमने जो लीपा-पोता है।
भाई से अब बहिन लड़ेगी,
चाचा से लड़ जाए अम्मा,
बाजे ऐसी दुम्मक-दुम्मा,
टूट जाएँ घर के सब खम्मा।
मुफ्त तमाशा हम देखेंगे,
टिकट नहीं, फ्री पास चाहिए।

—हमें नवीन प्रकाश चाहिए।

कितनी बुद्धि भरी मस्तक में,

इसका जोड़ लगाया हमने,
हिंदू भाइयों के पीछे,यह
हिंदू 'कोढ़' लगाया हमने।
कैसा है वक्तानून, इसे मत
लाला की लाली से पूछो,
पढ़ी-लिखी जो अंग्रेजिन हो,
न्यू-लाइट वाली से पूछो।
पति परमेश्वर बहुत बन लिए,
अब पत्नी को दास चाहिए।

—हमें नवीन प्रकाश चाहिए।

सौदा लाने में बजार से,
कभी लेट तुम हो जाओगे,
चूल्हे पर तलावक्त का नोटिस,
लिखा हुआ रक्खा पाओगे।
चौराहे पर जाकर देवी,
दही-बड़े की चाट खाएगी,
दखल जरा भी दोगे 'काका',
तो वह तुमको काट खाएगी।
क्लब में जाकर डांस करेगी,
उसे हास-परिहास चाहिए।

—हमें नवीन प्रकाश चाहिए।
❑

डंडा-प्रार्थना

विजयी नंग-धड़ंगा प्यारा,
डंडा ऊँचा रहे हमारा।

सदा रक्त बरसाने वाला,
घावों को सरसाने वाला,
अस्पताल पहुँचाने वाला,
मारधाड़ का यही सहारा।

डंडा ऊँचा रहे हमारा!

लूट-मार के भीषण रण में,
खटा-खट्ट बाजे क्षण-क्षण में,
काँपे शत्रु देखकर मन में,
शरणार्थी बन जाए बिचारा।

डंडा ऊँचा रहे हमारा!

इस डंडे के नीचे 'काका',
स्वतंत्रता से डालो डाका,
अगर कहीं हो जाए धड़ाका,
कर जाओ चुपचाप किनारा।

डंडा ऊँचा रहे हमारा!

आओ दादा-बाबा आओ,
इस डंडे पर बलि-बलि जाओ,
एक साथ मिलकर डकराओ,
मार-कुटाई ध्येय हमारा।

डंडा ऊँचा रहे हमारा!

बोलो लठिया माता की जै,
घोट चकाचक विजया पीजै,
बीस वर्ष मरघट में जीवे,
बन जा बेटा! मारा-धारा।

डंडा ऊँचा रहे हमारा!

हथियारों में सबसे सस्ता,
क्षण में करे खोपड़ी खस्ता,
मरियल हो अथवा हलमस्ता,
सब पर करे समान प्रहारा।

डंडा ऊँचा रहे हमारा।

इसकी अकड़ न जाने पाए,
चाहे पुलिस पकड़ ले जाए,
बीच खोपड़ी पर पड़ जाए,
तब होवे प्रण पूर्ण हमारा।

डंडा ऊँचा रहे हमारा!

❑

क्या चमका मेरा भाग, सखे!

मैं एर्थक्लास में हुआ पेक्तल,
वे मिलीं पास मैट्रिक मुझको,
बस इसी बात पर बार-बार कर
देती हैं 'अनफिट' मुझको,
वे मीठी-मीठी दिलखुशाल,
मैं बना नीम का साग, सखे!

क्या चमका मेरा भाग, सखे!

वे दिल्ली की रहने वालीं,
मैं ठहरा देहाती धुर्रा,
उनके कमरे में जाता हूँ,
देखें मुझको घुर्रा-घुर्रा।
वे गोरी-गोरी बगुला-सी,
मैं काला-काला काग, सखे!

क्या चमका मेरा भाग, सखे!

उनकी मनहर वीणा बजती,
मैं फटा मृंग बजाता हूँ,
बेसुरा गीत वे गाती हैं,
तो 'वाह-वाह' चिल्लाता हूँ।
ऊपर से हँसता रहता हूँ,
अंदर जलती है आग, सखे!

क्या चमका मेरा भाग, सखे!

मिस्टर टेसू के साथ रोज,
वे क्वीन-पार्क में जाती हैं,
फिर बैठ बेंच पर मस्ती से,
फिल्मी गाने लुढ़काती हैं।
शादी तो मेरे साथ हुई,
उस साले से क्या लाग, सखे?

क्या चमका मेरा भाग, सखे!

यदि उनके दिल के दफ्तर में
मिल जाए भाग्य से एक सीट,
वे मेरी हैं मैं उनका हूँ...
यह कहूँ ढोल को पीट-पीट।
वे पाकिस्तानी बिल्ली हैं,
मैं भारतीय बुलडॉग, सखे!

क्या चमका मेरा भाग, सखे!

साबुन से साड़ी धोता हूँ!
यदि मैली कुछ रह जाती है,
‘तुमसे तो धोबी अच्छा है’
यह कहकर डाँट लगाती है।
धुक-धुक चलता दिल का पंखा,
मुँह से दे जाता झाग, सखे!

क्या चमका मेरा भाग, सखे!

अंतिम उपाय यह सोचा है,
मैं अस्पताल में जाऊँगा,
डॉक्टर साहब से, कैपसूलया
गोली ऐसी लाऊँगा।
हिंसा मुझको करनी न पड़े,
वह घर से जाएँ भाग, सखे!

क्या चमका मेरा भाग, सखे!
❑

भगवान मुझे ऐसा वर दे!

दुनिया भर की दौलत कोई
लाकर मेरे आगे धर दे,
लंबा हूँ कुछ छोटा कर दे,
दुबला हूँ कुछ मोटा कर दे।
'फाइन' का परमिट कैंसिल कर
तू 'बोगस' का कोटा कर दे,

भगवान, मुझे ऐसा वर दे!

बिजली हो जिसमें लगी हुई,
पाइप से पानी आता हो,
कुछ टेढ़ी आँख दिखाने से,
मालिक मकान डर जाता हो।
भाड़ा कुछ भी देना न पड़े,रहने को तू ऐसा घर दे।

भगवान, मुझे ऐसा वर दे!

फिर बिना किराए का हमको,
मिल जाए कहीं से फरनीचर,
मेरे लल्ला के ट्यूशन को,
लग जाए अच्छा सा टीचर।
जो इम्तिहान के टाइम पर,
परचे सारे आउट कर दे।

भगवान, मुझे ऐसा वर दे।

टोपी के नीचे चिपकावै,
पन्ना किताब के फाड़-फाड़,
फिर बिना चलाए ही उसकी,
वह कलम चलेगी धाड़-धाड़।
जो फर्स्ट डिवीजन मिल जाए,
तो वह साहब बन जाएगा,
रिश्वत की रेल चलाकर फिर,
नोटों पर नोट बनाएगा।

तू किसी तरह इस उल्लू के
लल्लू को ऑफीसर कर दे!

भगवान, मुझे ऐसा वर दे!

इक मित्र मिले, बोले,
'काका'! तुम नित्य
कीर्तन किया करो,
कामेश्वरजी के मंदिर में,
दो घंटे ड्यूटी दिया करो।
मैं हाथ जोड़ बोला उनसे,
कीर्तन में कभी न जाऊँगा,
यदि जाऊँगा तो निश्चय ही
मैं बिना मौत मर जाऊँगा।

प्रार्थना-सभा में ही 'बापू'
पर हत्यारे ने वार किया,
'उड़िया बाबा' को कीर्तन में ही,
किसी दुष्ट ने मार दिया।
ऐसी बातें सुनते-सुनते,
अपना तो जी घबराता है,
ढप झाँझ-मजीरा सुनते ही,
हमको बुखार चढ़ आता है।

इससे तो अच्छा है कुछ दिन,
गंगाजी पर ही वास करें,
गंगाजल अग्निवर्धक है,
भोजन का सत्यानास करें।
हाजमा-शक्ति बढ़ जाएगी,
खुल जाएँगे सातों परदे!

भगवान, मुझे ऐसा वर दे!
❑❑❑